आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क
INDIRECT TAXES AND CUSTOMS
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
देशसेवार्थ करसंचय

विभागीय गृह पत्रिका

सीमा भारती

अंक - 28

वर्ष : 2022-2023

Customs Act 60 गौरवशाली वर्ष

सेवार्थ रक्षार्थ

मुंबई सीमाशुल्क, अंचल - I

नवीन सीमाशुल्क भवन, बैलार्ड पियर, मुंबई - ४०० ००१.

Mumbai Customs Zone - I

New Customs House, Ballard Pier, Mumbai - 400 001.

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित समारोह की झलकियाँ

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विभागीय हिंदी गृह पत्रिका

अंक 28

सीमा भारती

वर्ष : 2022-2023

संरक्षक - प्रमोद कुमार अग्रवाल
प्रधान मुख्य आयुक्त, सीमाशुल्क अंचल - 1

संपादक मंडल

प्रधान संपादक - सुनील जैन
प्रधान आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य)

प्रबंध संपादक - मल्लीनाथ के. जेऊरे
अपर आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य)

संपादक - जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहायक

स्मृति कुमारी
आशुलिपिक

मोहम्मद इकबाल
आशुलिपिक

गौरांग आम्ब्रे
कर सहायक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल
का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
केवल विभागीय प्रयोग के लिए

मुंबई सीमाशुल्क, अंचल - 1
नवीन सीमाशुल्क भवन, बैलार्ड पियर, मुंबई - 400 001.
Mumbai Customs, Zone-1
New Customs House, Ballard Pier, Mumbai - 400 001.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक का नाम/पदनाम	पृष्ठ सं.
1	संरक्षक की कलम से	प्रमोद कुमार अग्रवाल, मुख्य आयुक्त	I
2	प्रधान संपादक की कलम से	सुनील जैन, प्रधान आयुक्त	II
3.	आयुक्त, सीमाशुल्क (आयात-I) की कलम से	विवेक पाण्डेय, आयुक्त	III
4.	आयुक्त, सीमाशुल्क (आयात-II) की कलम से	किरन वर्मा, आयुक्त	IV
5.	आयुक्त, सीमाशुल्क (निर्यात) की कलम से	चेतन जैन, आयुक्त	V
6.	आयुक्त, आयुक्तालय (लेखा परीक्षा) की कलम से	अशोक कुमार पी. कोठारी, आयुक्त	VI
7.	प्रबंध संपादक की कलम से	मल्लीनाथ के. जेऊरे, अपर आयुक्त	VII
8.	संपादक की कलम से	जागृति एच. जोशी, सहायक निदेशक (राजभाषा)	VIII
9.	कस्टम एक्ट के गौरवशाली 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	1
10.	शहीद दिवस के अवसर पर सीमाशुल्क, मुंबई अंचल-I में शहीद स्तंभ के लोकार्पण की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	4
11.	कोविड-19 महामारी के लिए आयोजित बूस्टर कैम्प की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	5
12.	हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	6
13.	बेटी की विदाई एवं आईए 'पक्षियों' से कुछ सीखें	रिद्धि पुत्री अवधेश कुमार, कर सहायक	7
14.	रक्तदान ही जीवनदान	श्रीमती प्राजक्ता राजेंद्र आम्ब्रे माता, गौरांग आम्ब्रे, कर सहायक	8
15.	कर भला तो हो भला	स्मृति कुमारी, स्टेनोग्राफर ग्रेड-1	10
16.	गणतंत्र दिवस की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	11
17.	कस्टम्स के मामलों के निपटान की योजना पर सीमाशुल्क अंचल-1 में आयोजित सेमिनार/कार्यशाला की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	12
18.	जलियांवाला बाग नरसंहार दिवस के अवसर पर हैल्थ चेक-अप एवं ब्लड डोनेशन कैम्प की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	13
19.	खादी महोत्सव कार्यक्रम की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	14
20.	एक शाम बैच "94" के साथियों के नाम	आदित्य दत्ता, सहायक निदेशक	15
21.	मन की शुद्धता	दिलीप यादवराव लिमजे, मूल्यनिरुपक अधिकारी	20
22.	माँ	स्मृति कुमारी, स्टेनोग्राफर ग्रेड-1	21
23.	दरवाजा	सोमबीर सुई, कर सहायक	21
24.	प्राकृतिक रूप में की गई पक्षियों की फोटोग्राफी	संध्या जाधव, प्रशासनिक अधिकारी	22
25.	बच्चों की कलाकृतियाँ	जागृति एच. जोशी, सहायक निदेशक (राजभाषा) के पोती, पोता (प्रेया नयन और विराज नयन)	23

26.	बच्चों की कलाकृतियाँ	जागृति एच. जोशी, सहायक निदेशक (राजभाषा) के नाती, नातीन (पर्व-प्रेक्षा)	24
27.	बच्चों की कलाकृतियाँ	रेशमा कुंदर, पुत्री उदय कुंदर, कैंटीन सहायक	25
28.	मेरे सपनों का भारत (प्रथम पुरस्कृत निबंध)	अमित कुमार यादव, कर सहायक	26
29.	बेरोजगारी की समस्या एवं समाधान (द्वितीय पुरस्कृत निबंध)	मुकेश कुमार, कर सहायक	28
30.	बेरोजगारी एवं समाधान (तृतीय पुरस्कृत निबंध)	विपिन कुमार, कार्यकारी सहायक	30
31.	हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	31
32.	हिंदी पखवाड़े के समापन /पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	32
33.	हिंदी पखवाड़े में विजेताओं को सम्मानित/पुरस्कृत करने की झलकियाँ	हिंदी अनुभाग	33
34.	युवावर्ग और विदेश	धर्मवीर चौहान, कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी	35
35.	कौन हूं मैं	आयुषी मित्तल, कर सहायक	37
36.	वित्तीय साक्षरता	प्राची जायसवाल, आयुक्त (लेखा परीक्षा) की निजी सहायक	38
37.	सीमाशुल्क, मुंबई के अधिकारियों की खेल गतिविधियों की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	39
38.	राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	41
39.	सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम की झलकियाँ	सतर्कता अनुभाग	42
40.	रंगोली कार्यक्रम की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	43
41.	सफलता का रहस्य	प्रशस्तिका कुमारी, पत्नि विपिन कुमार, कर सहायक	44
42.	गजलें	चन्दन बिष्ट, सहायक आयुक्त (सेवानिवृत्त)	46
43.	योग	विशाल लक्ष्मण पारचा	48
44.	निबंध	रविंद्र छाया पाटिल, कर सहायक	49
45.	महिला दिवस कार्यक्रम की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	50
46.	मेडिटेशन कार्यशाला की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	51
47.	सदस्य सीबीआईसी (श्रीमती रमा मैथ्यू) के सीमाशुल्क, मुंबई में भ्रमण की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	52
48.	सदस्य सीबीआईसी (श्रीमती संगीता शर्मा) के सीमाशुल्क, मुंबई में भ्रमण की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	53
49.	अतर्राष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	54
50.	मुंबई में आयोजित रोजगार मेले की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	57
51.	कस्टम्स ब्रोकर्स लाइसेंस मैनेजमेंट सिस्टम के उद्घाटन की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	58
52.	कोविड-19 महामारी में शहीद हुए वॉरियर्स के परिजनों को शहीद दिवस पर सम्मानित किया गया	सीएचएस अनुभाग	59
53.	मियावाकी प्रोजेक्ट की झलकियाँ-वृक्ष लगाएं प्रदूषण को मिटाएं	सीएचएस अनुभाग	60
54.	सीमाशुल्क मुंबई अंचल-1 के सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु आयोजित विदाई समारोह कार्यक्रम की झलकियाँ	सीएचएस अनुभाग	61

शुभकामना संदेश

संरक्षक की कलम से....

'सीमा भारती' का 28 वां अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों की रुचि एवं आप लोगों के सहयोग से यह पत्रिका साहित्य की विभिन्न विधाओं को लेकर आपके सामने अवतरित हुई है।

हिन्दी पत्रिका के माध्यम से हमारे कार्यालय के सदस्यों के विचार पूरे देश में स्थित हमारे विभाग के अन्य कार्यालयों तक पहुँचते हैं। विचारों के आदान-प्रदान का यह एक सशक्त माध्यम है और इससे कार्यालय के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच भी प्राप्त होता है। निश्चित ही राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

मुझे हर्ष है कि हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक रचनाएं देकर 'सीमा भारती' पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाया है। मैं इस प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों और रचनाकारों को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

प्रमोद कुमार अग्रवाल
प्रधान मुख्य आयुक्त
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल - 1

शुभकामना संदेश

प्रधान संपादक की कलम से....

सीमाशुल्क विभाग का प्रमुख कार्य राजस्व का नियमपूर्वक संग्रह करके देश की आर्थिक प्रगति में निरन्तर योगदान देना है। हमें इसके साथ-साथ भारत सरकार के गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने एवं इसका विस्तार करने का उत्तरदायित्व सौंपकर देश के नागरिकों से सहज एवं सरल संवाद स्थापित करने का सुअवसर प्रदान किया गया है।

हिन्दी के प्रति अभिरुचि एवं जागृति बढ़े इसे ध्यान में रखते हुए हमारे कार्यालय से हर वर्ष ''सीमाभारती'' पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है।

हमारे इस प्रयास से कार्यालय के सदस्यों में हिन्दी के प्रति स्वाभाविक उत्सुकता एवं उसके प्रयोग के महत्व को समझने का एक सार्थक वातावरण निर्मित हुआ है।

हमें पूर्ण रुप से विश्वास है कि आपका सक्रिय सहयोग एवं सकारात्मक प्रयास इस उद्देश्य की प्राप्ति में एक परिणात्मक एवं सराहनीय भूमिका निभाएगा।

सुनील जैन

प्रधान आयुक्त

सीमाशुल्क, मुंबई अंचल - 1

शुभकामना संदेश

आयुक्त, सीमाशुल्क (आयात-I) की कलम से....

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-I, अपनी वार्षिक विभागीय गृह-पत्रिका ''सीमाभारती'' के 28 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिन्दी का हमारी राजभाषा के रुप में एक महत्वपूर्ण स्थान है। गृह पत्रिका न केवल राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देती है बल्कि एक दूसरे के विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक सार्थक मंच भी प्रदान करती है।

प्रख्यात कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने कहा है- ''हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।'' इस कथन की पुष्टि इस बात से होती है कि भारत में हिन्दी भाषा सर्वाधिक मात्रा में बोली एवं समझी जाती है। अतः यदि किसी भाषा के माध्यम से समूचे देश को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है तो वह कोई और नहीं सिर्फ और सिर्फ हिन्दी ही है।

हिन्दी संपर्क भाषा के साथ-साथ प्रभावशाली कामकाज की भाषा बने, इसके लिए सबका चिंतन और सामूहिक प्रयास जरुरी है। यह हम सभी का उत्तरदायित्व है कि हम भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों और राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ स्वयं भी प्रतिदिन के दैनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

गृह पत्रिका के प्रकाशन का यह प्रयास सृजनात्मक एवं महत्वपूर्ण है। इससे निश्चित रुप से विभागीय अधिकारियों व कार्मिकों का हिन्दी लेखन के प्रति उत्साह बढ़ेगा और राजकीय कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा। मुझे विश्वास है कि ''सीमाभारती'' हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाती रहेगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

विवेक पाण्डेय

विवेक पाण्डेय
आयुक्त
सीमाशुल्क, आयात -I

शुभकामना संदेश

आयुक्त, सीमाशुल्क (आयात-II) की कलम से....

भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु किए जाने वाले कार्यों में विभागीय पत्रिका की अपनी विशेष भूमिका होती है। सीमाशुल्क मुंबई, अंचल- । की गृह-पत्रिका ''सीमाभारती'' के 28 वें अंक के प्रकाशन के लिए मैं इस अंचल के सभी अधिकारियों व कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देती हूँ।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है। आयुक्तालय में रचनात्मक वातावरण तैयार करने एवं कार्मिकों में राजभाषा के प्रति निष्ठा जगाने में विभागीय पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पत्रिका की रचनाओं की विविधता हेतु रचनाकार निश्चित रुप से प्रशंसा के पात्र हैं। यह पत्रिका हिन्दी के विकास एवं हिन्दी के सहज प्रयोग के क्षेत्र में सराहनीय कदम है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-I के सदस्यों के विचारों का आदान-प्रदान होगा, जिससे इस अंचल के अधिकारियों व कार्मिकों में सृजनात्मक एवं सकारात्मक विचारों को पैदा करने में मदद मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

किरन वर्मा
आयुक्त
सीमाशुल्क, आयात-II

शुभकामना संदेश

आयुक्त, सीमाशुल्क (निर्यात) की कलम से....

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मुंबई, सीमाशुल्क अंचल-I की विभागीय पत्रिका 'सीमाभारती' के 28 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

सीमाशुल्क उगाही संबंधी अपने कार्यों के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में हमारा ज़ोन अग्रसर है। विभागीय पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय कदम है। मुझे विश्वास है कि 'सीमाभारती' का यह अंक रोचक और ज्ञानवर्धक साबित होगा। हिन्दी में काम करना हम सभी का कर्तव्य है। मैं ज़ोन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि अपने कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने का पूरा प्रयास करें।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं रचनाकारों, संपादक मण्डल एवं अन्य सभी सहयोगियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। पत्रिका के निरंतर एवं सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

चेतन जैन

चेतन जैन
आयुक्त
सीमाशुल्क निर्यात

शुभकामना संदेश

आयुक्त, सीमाशुल्क (लेखापरीक्षा) की कलम से....

सीमा भारती' का प्रकाशन हिन्दी के विकास की दिशा में हमारे विभाग का एक लघु एवं विनम्र प्रयास है। इससे न सिर्फ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायता मिलेगी बल्कि, कर्मचारी सदस्यों की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक अभिव्यक्तियों को भी एक सार्थक माध्यम प्राप्त हो सकेगा।

हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जो देश को एकता के सूत्र में बांध सकती है। विश्व-क्षितिज पर अपनी सक्षमता का परिचय देने वाले अनेक राष्ट्र जैसे-रूस, जापान, चीन इत्यादि कैसे उन्नति एवं समृद्धि के शिखर पर पहुंचे हैं? सभी देशों में अपनी ही भाषा में सारे क्रिया-कलाप सम्पादित होते हैं। इसके अलावा भी यह गौरव एवं सम्मान की बात है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा में अपना कार्यालयीन कार्य करें।

सीमा भारती में अपनी रचनाओं एवं अन्य माध्यमों से योगदान देने वाले समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं सम्पादन मंडल का आभार एवं शुभकामनाएं।

अशोक कुमार पी. कोठारी
आयुक्त (लेखा परीक्षा)
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल -I

शुभकामना संदेश

प्रबंध संपादक की कलम से....

आज के इस प्रतिस्पर्धा भरे युग में हर सुबह नयी चुनौतियों के साथ आती है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, नित बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने के लिए, नये आयामों को स्वीकारने के लिए अपनी प्रतिभा को खुला आकाश देना होगा। इस प्रतिभा को मुक्त रुप से पनपने देने में राजभाषा पत्रिका की भूमिका काफी सहायक है।

राजभाषा हिन्दी को उसका उचित स्थान देना भी आज के इस गतिमान युग में एक चुनौती समान ही है। मुझे खुशी है कि हम इस चुनौती का सामना करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। बस हमें इन कोशिशों को बरकरार रखते हुए अपने योगदान को और बढ़ाना है।

अंत में, मैं सीमाशुल्क मुंबई अंचल-I की गृह पत्रिका 'सीमाभारती' के 28 वें अंक के प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों को धन्यवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। आशा है, इसे पढ़कर आप अपने बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराएंगे जिससे आगामी अंक को और सरस, सुरुचिपूर्ण एवं सारगर्भित बनाया जा सके।

मल्लीनाथ के. जेऊरे
अपर आयुक्त, सीमाशुल्क (सामान्य)
सीमाशुल्क, मुंबई अंचल-I

शुभकामना संदेश

संपादक की कलम से....

'सीमा भारती' पत्रिका का 28 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। मेरा यह सतत प्रयास रहा है कि पूर्ववर्ती अंकों की भाँति भविष्य में भी 'सीमा भारती' आपके लिए सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख प्रस्तुत करती रहे।

मेरे इस लक्ष्य में मेरे वरिष्ठ अधिकारियों, मेरे सहयोगियों का मुझे भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहता है जिसके लिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ। कार्यालय में हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिनमें पत्रिका प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इससे कार्यालय में हिन्दीमय वातावरण बनने के साथ-साथ अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा भी मिलती है।

सीमा भारती का प्रकाशन राजभाषा के लिए किए जा रहे उन बहुआयामी प्रयासों की एक कड़ी है, जिससे हिन्दी में अभिव्यक्ति को न सिर्फ बल मिलता है, बल्कि इससे सहयोगी कर्मचारियों की लेखकीय प्रतिभा को प्रस्फुटित होने का सुअवसर भी प्राप्त होता है। इससे उनकी हिन्दी संबंधी झिझक को दूर करने में भी सहायता मिलती है, जिससे वे अपने कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में सम्पन्न कर सकने में आत्मविश्वास एवं गौरव महसूस करते हैं।

अंत में मैं अपने सहयोगियों स्मृति कुमारी, मोहम्मद इकबाल, गौरांग आंब्रे को धन्यवाद करना चाहूंगी जिनके सहयोग से इस पत्रिका का प्रकाशन कार्य व्यवस्थित ढंग से पूर्ण हो सका।

जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक, (राजभाषा)
सीमाशुल्क सामान्य, मुंबई अंचल-I

कस्टम एक्ट के गौरवशाली 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

.... महात्मा गाँधी

कस्टम एक्ट के गौरवशाली 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

इस देश के लोग पीढ़ियों से सिर्फ जाति देखते आ रहे हैं, व्यक्तित्व देखने की न उन्हें आदत है, न परवाह है।

.... हजारी प्रसाद द्विवेदी

कस्टम एक्ट के गौरवशाली 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

शहीद दिवस के अवसर पर सीमाशुल्क मुंबई अंचल-1 में शहीद स्तंभ के लोकार्पण की झलकियाँ

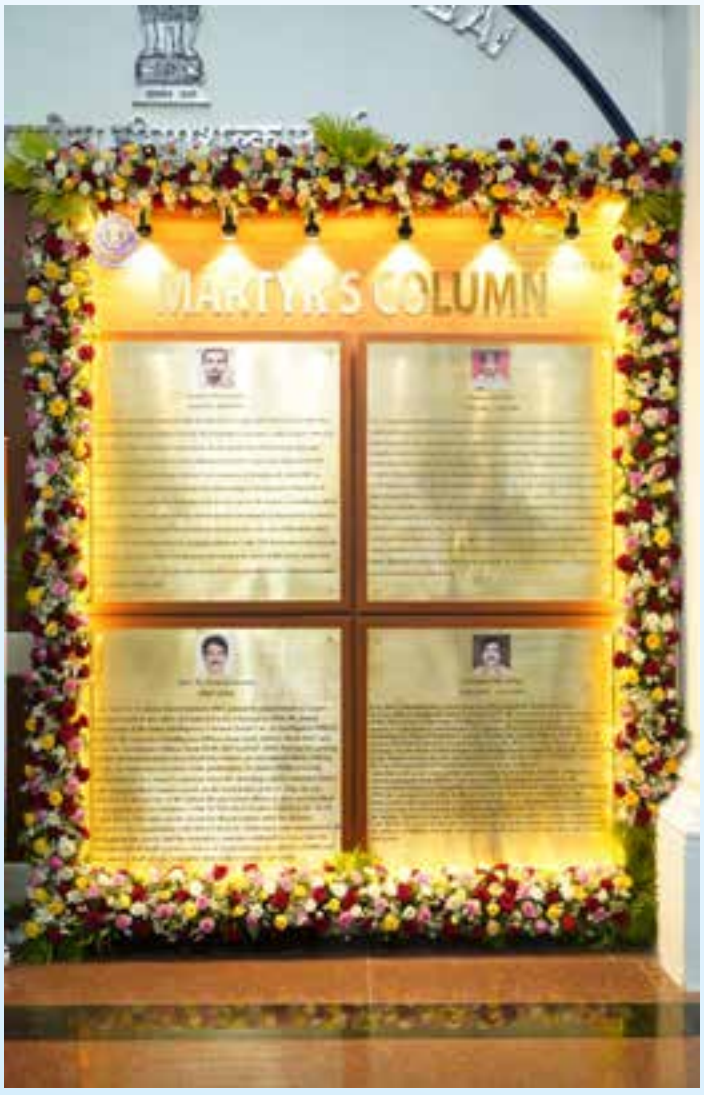

कोविड-19 महामारी के लिए आयोजित बूस्टर कैम्प की झलकियाँ

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

कर्म यज्ञ से जीवन के सपनों का स्वर्ग मिलेगा। इसी विपिन में मानस की आशा का कुसुम खिलेगा ।।

--जयशंकर प्रसाद

बेटी की विदाई की एक सुन्दर कविता

कन्यादान हुआ जब पूरा, आया समय विदाई का।
हँसी खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।।
बेटी के उस कातर स्वर ने बाबुल को झकझोर दिया।
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया।।
अपने आँगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।
मेरे रोने का पल भर भी, बिल्कुल ध्यान नहीं।।
देखो अन्तिम बार देहरी, लोग मुझे पुजवाते हैं।
आकर के पापा क्यों इनको, आप नही धमकाते हैं।।
नहीं रोकते चाचा ताऊ, भैया से भी आस नहीं।
ऐसी भी क्या निष्ठुरता है, कोई आता पास नहीं।।
बेटी की बातों को सुन के पिता नहीं रह सका खड़ा।
उमड़ पड़े आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।
कातर बछिया सी वह बेटी, लिपट पिता से रोती थी।
जैसे यादों के अक्षर वह, अश्रु बिंदु से धोती थी।।
माँ को लगा गोद से कोई, मानो सब कुछ छीन चला।
फूल सभी घर की फुलवारी से कोई ज्यों बीन चला।।
छोटा भाई, भी कोने में, बैठा - बैठा सुबक रहा।
उसको कौन करेगा चुप अब, वह कोने में दुबक रहा।।
बेटी के जाने पर घर ने, जाने क्या क्या खोया है।
कभी न रोने वाला बाप, फूट-फूट कर रोया है।।

आईए 'पक्षियों' से कुछ सीखें

- *रात को कुछ नहीं खाते*
- *रात को घूमते नहीं*
- *अपने बच्चे को सही समय पर सिखाते हैं।*
- *ठूंस-ठूंस के कभी नहीं खाते। आपने कितने भी दाने डाले हों, थोड़ा खा के उड़ जाएंगे, साथ कुछ नहीं ले जाते।*
- *रात होते ही सो जाएंगे सुबह जल्दी जाग जाएंगे, गाते चहकते उठेंगे।*
- *अपने शरीर से खूब काम लेते हैं। रात के सिवा आराम नहीं करते। उनकी तरह परिश्रम करने से हृदय किडनी लिवर के रोग नहीं होते।*
- *अपना आहार कभी नहीं बदलते।*
- *बीमारी आई तो खाना छोड़ देंगे, तभी आएंगे जब वे ठीक हो जाएंगे।*
- *अपने बच्चों को भरपूर प्यार देंगे।*
- *प्रकृति से उतना ही लेते हैं, जितनी जरुरत है।*

रिद्धि, पुत्री अवधेश कुमार यादव
कर सहायक
मूल्यांकन महानिदेशालय, मुम्बई

बड़ा सोचो, जल्दी सोचो, आगे सोचो। विचारों पर किसी का एकाधिकार नहीं है।
.... धीरुभाई अंबानी

रक्तदान ही जीवनदान

रक्त हमारे शरीर में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शरीर के अन्य सभी कार्यों के लिए जिम्मेदार है जो हमें जीवित रखते हैं। दुर्घटनाओं, आपदाओं, गर्भावस्था, प्रसव, बड़ी सर्जरी और गंभीर रक्ताल्पता के दौरान खून की कमी से होने वाली मौतें अपरिहार्य मौते हैं। इन सभी स्थितियों में रक्त की उपलब्धता से लोगों की जान बचाई जा सकती है। रक्त की उपलब्धता किसी मशीन या फॅक्टरी से नहीं की जा सकती है। मनुष्य के रक्तदान करने से ही रक्त की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है। इसलिए रक्तदान बेहद जरूरी कार्य है।

रक्तदान बहुत ही आसान और दर्दरहित प्रक्रिया है। जिसे केवल 10 मिनट की अवधि लगती है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकता है। जिसकी उम्र 18 से 60 साल की है और जिसका वजन 50 किलो के ऊपर है ऐसा कोई भी निरोगी व्यक्ति साल में चार बार रक्तदान कर सकता है। दो रक्तदान के बीच में 3 महीने का अंतर होना बहुत जरुरी है। रक्तदान करने के बाद अगले 36 घंटे में शरीर में रक्त की मात्रा साधारण हो जाती है और 2 से 3 हफ्ते में शरीर मे नयी रक्तपेशिंया बन जाती हैं।

इंसान के शरीर में 4 से 5 लीटर खून होता है। रक्तदान के वक्त केवल 350 मिली खून निकाला जाता है। रक्तदान करने से शरीर में कोई भी कमजोरी महसूस नहीं होती, उल्टा शरीर में नयी रक्तपेशियाँ बनने से मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। हृदय का कार्य नियंत्रित होता है। स्ट्रोक का धोखा कम होता है। व्यक्ति को रक्तदान से जीवनदान का आनंद मिलता है।

रक्तदाता का वजन, पल्स रेट, ब्लड प्रेशर, बॉडी टेम्परेचर, हीमोग्लोबीन, मेडिकल हिस्ट्री आदि चीजों के सामान्य पाए जाने पर डॉक्टर्स या ब्लड डोनेशन टीम के सदस्य आपका रक्त लेते हैं।

रक्तदाताओं से रक्त संग्रहित करने के बाद रक्तपेटी में रक्त का ऑटोमेटिक मशीन द्वारा विघटन किया जाता है। एक रक्तपेशी से तीन रक्तघटक बनाये जाते हैं जैसे कि PCV (लाल रक्तपेशी), FFP (फ्लाज्मा) और Platelates (प्लेटलेट्स)। इसका मतलब है एक मनुष्य रक्तदान करके तीन रोगियों को जीवनदान देता है।

अलग-अलग बीमारीयों में अलग-अलग रक्तघटक की जरूरत होती है और पर्याप्त रक्तघटक उपलब्धि के कारण पेशेंट को आवश्यक रक्तघटक ही चढ़ाया जाता है।

- ॲनेमिया, थॅलेसेमिया, ब्लड कॅन्सर, डायलिसिस, बड़ी सर्जरी, प्रसूति के दरम्यान होने वाले रक्तस्त्राव में पेशेंट को PCV की जरूरत होती है।

- प्रसूति के दरम्यान होने वाले रक्तस्त्राव को रोकने के लिए, Snake Bite पेशेंट, Poisoning पेशेंट में FFP की जरूरत होती है।

- डेंग्यू, लेप्टो, मलेरिया जैसे बुखार में शरीर में प्लेटलेट्स की कमी होती है। ऐसे पेशेंट को प्लेटलेट्स की जरूरत होती है।

रक्त संग्रहित करने के बाद, उसका विघटन करते हैं और प्रयोगशाला में उस रक्त की अलग-अलग टेस्ट होने के बाद अलग-अलग रक्तघटक अलग-अलग तापमान से रक्तपेटी रेफ्रिजरेटर में सुरक्षित रखते हैं। प्लाज्मा 1 साल तक और प्लेटलेट्स केवल 5 दिन तक सुरक्षित रहते हैं।

14 जून को विश्व रक्तदान दिवस मनाया जाता है। इस दिन रक्तपेटियाँ सामाजिक संस्थाओं की सहकार्य से रक्तदान शिविर का आयोजन करते हैं। Volunteer Donors (ऐच्छिक रक्तदाता) रक्तदान शिविर, सामाजिक संस्था इनके सहकार्य से महाराष्ट्र में Volunteer Blood Donation Campaign विकसित हुआ है। रक्तसंग्रह में महाराष्ट्र सबसे प्रथम क्रमांक पर है।

प्रगत, टेक्नॉलॉजी के बावजूद भी रक्त के लिए कोई विकल्प नहीं है। रक्त प्रतीक है जो विभिन्न धर्म, जाति और पंथ के लोगों को एकजुट करने में मदद करता है। रक्तदान करके आप समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। रक्तदान करके आप रोगियों की जान बचाते हैं। इसलिए रक्तदान ही जीवनदान है।

श्रीमती प्राजक्ता राजेंद्र आंब्रे
माता गौरांग आम्ब्रे, कर सहायक

शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने को लिए उपयोग कर सकते हैं।

.... नेल्सन मंडेला

कर भला तो हो भला ?

'कर भला तो हो भला।' कहावत तो काफी पुरानी है लेकिन, सच में ऐसा होता है क्या? जब भी हम दूसरों का भला करना चाहते हैं तो हमारे साथ भी भला ही होता है क्या?

कुछ साल पहले की बात है, मैं और मेरी मित्र 'दीक्षा' एक शहर में प्राइवेट जॉब करते थे। कंपनी की तरफ से हमें रहने के लिए फ्लैट मिला हुआ था। जिस कॉलोनी में हम रहते थे वहाँ एक बिल्ली भी रहती थी। हमने जब देखा कि वह बिल्ली पालतू नहीं है और उसे कोई खाना नहीं देता तो उसे खाना देना शुरु कर दिया। जब भी हम ऑफिस से वापस आते, बिल्ली हमारे पीछे-पीछे फ्लैट तक आ जाती। खाना खाकर, थोड़ा समय बिताकर वह वापस बाहर घूमने चली जाती। जिस दिन छुट्टी होती, बिल्ली हमारे साथ ही ज्यादातर समय बिताती। उस बिल्ली को हमने कोई नाम तो नहीं दिया लेकिन, लगाव अपनों सा ही था।

एक दिन हमने देखा कि बिल्ली के पैर में काफी चोट लगी हुई थी। दीक्षा ने कहा कि बिल्ली खुद ही चाट - चाट कर अपनी चोट सही कर लेती है। हमें लगा कि कुछ दिन में चोट सही हो जाएगी। लेकिन अगले दिन हमने देखा कि उसकी चोट और बढ़ गई थी। अनुमान लगाया कि इसका पैर किसी चीज में टकरा गया होगा।

हमने उसे वेटनरी डॉक्टर के पास ले जाने की सोची। हमने एक ऑटो बुलाया और बिल्ली को लेकर उसमें बैठ गए। जैसे ही ऑटो चला, बिल्ली डरकर भागने की कोशिश करने लगी। हमने उसे पकड़ने की कोशिश की और उसने अपने आपको छुड़ाने की। इन्हीं कोशिशों में बिल्ली का पंजा दीक्षा के पैर में लग गया। मैंने तुरंत ऑटो रुकवाया। ऑटो रुकते ही बिल्ली पास के जंगल में भाग गई। मैं बहुत डर गई, एक तो बिल्ली के जंगल में खोने का डर, दूसरा दीक्षा के चोट लगने का डर बिल्ली को लेकर तो हम हॉस्पिटल नहीं जा पाए लेकिन हमें फिर भी हॉस्पिटल जाना पड़ा, वो भी जानवरों के नहीं बल्कि इंसानों के। दीक्षा को टिटेनस शॉट लगा। हॉस्पिटल से वापस आते समय हम यही सोच रहे थे कि बिल्ली सही सलामत हो। वापस जंगल के पास पहुँचकर हमने उसे ढूंढना शुरु किया। बिल्ली वहाँ नहीं मिली। हम दोनों एकदम परेशान थे कि क्या करने चले थे और क्या हो गया। जब बिल्ली जंगल के पास नहीं मिली तो हमें लगा शायद वो वापस कॉलोनी में पहुँच गई हो।

कॉलोनी में वापस आते ही हमने उसे गेट के पास बैठे देखा। तब जा कर हमारी साँस में साँस आई। हमें लगा बिल्ली हमसे नाराज होगी। लेकिन उसने हमसे कोई नाराजगी जाहिर नहीं की। जब हम अपने फ्लैट पर आए, वो पीछे-पीछे आ गई। और कमरे में आकर आराम से सो गई।

उसका भला तो करना चाहा, लेकिन, न उसका भला हो पाया और ना ही हम भले रह पाए। फिर भी जब उसे कमरे में आराम से सोता देखा तो सुकून हुआ कि हमने उसका भला करने की कोशिश तो की।

स्मृति कुमारी
स्टेनोग्राफर ग्रेड-1
हिन्दी अनुभाग (सा.)

गणतंत्र दिवस की झलकियाँ

स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो सत्य का भी ज्ञान कर ले पूर्व चलने के बटोही बाट की पहचान कर ले।

--हरिवंश राय बच्चन

कस्टम्स के मामलों के निपटान की योजना पर सीमाशुल्क अंचल-1 में आयोजित सेमिनार / कार्यशाला की झलकियाँ

जलियांवाला बाग नरसंहार दिवस के अवसर पर
हैल्थ चेक-अप एवं ब्लड डोनेशन कैम्प की झलकियाँ

खादी महोत्सव कार्यक्रम की झलकियाँ

कभी-कभी हमें उन लोगों से शिक्षा मिलती है जिन्हें हम अभिमान वश अज्ञानी समझते हैं।

--मुंशी प्रेमचंद

एक शाम बैच "94" साथियों के नाम

बात १९९४ की है। आँखों में सपने लिए कुछ युवाओं की नियुक्ति सीमा शुल्क विभाग में होती है। इनमें से कुछ युवा बम्बई (अब मुंबई) के हैं, तो कुछ देश के दूसरे राज्यों से। इनमें से कुछ युवाओं की नियुक्ति बम्बई में होती है तो कुछ की नियुक्ति गोवा में। पर इनके बीच एक समानता है कि ये सब एक ही बैच के हैं, एक ही रैंक के हैं। ९४ बैच के निवारक अधिकारी (प्रिवेंटिव ऑफिसर)। यही एक धागे की तरह इन सबको उसी समय से बांधे रहता है। इन बीते सालों में विभिन्न कार्यस्थलों पर एक साथ काम करते हुए ये सब परस्पर मित्र बन जाते हैं और और एक दूसरे के सुख और दुःख में साथ देते हुए, एक- दूसरे को सहयोग करते हुए वो धागा उत्तरोत्तर मजबूत होता चला जाता है। इन बीते सालों में वे सब पहले निवारक अधिकारी से अधीक्षक बनते हैं और फिर कई चरणों में सहायक आयुक्त। अभी कुछ दिन पहले आये पदोन्नति के आदेश के बाद बचे हुए लगभग सभी मित्र पदोन्नति पाकर सहायक आयुक्त बन जाते हैं। इसी ख़ुशी में आज यानि शनिवार की शाम को सभी मित्र होटल पेनेन्सुला में मिलने वाले हैं. इन मित्रों में से एक अपने फूल बाबू भी हैं जो फ़िलहाल बीते दिनों को याद करते हुए उरण फाटा पर खड़े होकर बेसब्री के साथ अपने मित्र शेखर जी का इंतजार कर रहे हैं। तय कार्यक्रम के अनुसार वे उनके साथ ही उनकी गाड़ी में होटल जाने वाले हैं। वे घड़ी देखते हैं, ६ बजकर १५ मिनट हो रहे हैं। तय कार्यक्रम के अनुसार उन्हें आने में अभी भी ५ मिनट बाकी हैं। वे एक बार फिर से उन दिनों को याद करने लग जाते हैं जब उन्होंने अपने इन्हीं साथियों के साथ सीमा शुल्क विभाग ज्वाइन किया था और साथ ही एक महीने का प्रशिक्षण लिया था.

उन्हें आज भी वो दिन यानि २ जून १९९४ गुरुवार का दिन था। वे करीब ९:30 बजे ही बलार्ड पियर स्थित सीमा शुल्क भवन के कर्मचारियों की आवाजाही के द्वार पर पहुँच जाते हैं। गेट पर खाकी वर्दी में सीमाशुल्क का सिपाही खड़ा है। उन दिनों फूलबाबू को खाकी वर्दी से ना जाने क्यों एक नामालूम सा डर बना रहता था। अभी पिछले कई दिनों से वे ज्वाइन करने से पहले की कागजी खानापूर्ति और साइकिलिंग टेस्ट देने के सिलसिले में कई बार सीमा शुल्क आ रहे हैं, और हर बार अकेले होने पर उन्हें सिपाही द्वारा परिचय पूछे जाने पर घबराहट सी हो जाती है। हालाँकि उनके द्वारा ये बताये जाने पर कि वे निवारक अधिकारी के रूप में ज्वाइन करने के सिलसिले में आये हैं, वह बेहद सम्मान की मुद्रा में खड़ा होकर द्वार खोल देता है। फिर भी फूलबाबू आने पर द्वार से थोड़ी दूर पर खड़े होकर किसी अन्य ज्वाइन करने वाले सहयोगी की प्रतीक्षा जरुर करते हैं ताकि उन्हें सिपाही द्वारा प्रश्न परिचय पूछे जाने पर उत्तर देने की बाध्यता ना रहे। वैसे आज तो सबको एक साथ ही ज्वाइन करना है इसलिए थोड़ी देर में सब गेट पर आ जाते हैं। फूलबाबू भी उनके साथ आ मिलते हैं। सबसे फूलबाबू की पहचान हो गयी है क्योंकि पिछले कई दिनों से इन सब से मिलना जुलना हो रहा है। ये सभी साइकिलिंग टेस्ट और रनिंग टेस्ट देने वाले ग्रुप में साथ थे। आज द्वार पर खड़ा सिपाही किसी से कोई सवाल ना पूछकर सम्मान की मुद्रा में खड़े होकर द्वार खोल देता है।

उसे शायद पता चल चुका है कि ये सभी आज निवारक अधिकारी के रूप में शपथ लेने वाले हैं। अन्दर आकर पता चला कि कार्यालय खुलने में अभी समय है। कोई १० बजे स्थापना विभाग का लिपिक आ जाता है। सब उसके साथ ही उसके सेक्शन में चले जाते हैं। सब उसके साथ ही उसके सेक्शन में चले जाते हैं। वह सबके हाथ में एक टाइप किया हुआ शपथ पत्र देता है और कहता है कि अपर आयुक्त अपने कक्ष में सबको शपथ दिलाएंगे। करीब ११:30 बजे वे आते हैं और कोई 12 बजे सबको अपने कक्ष में ही बुला लेते हैं। जल्द ही शपथ कार्यक्रम शुरू हो जाता है। वे एक-एक करके सबको शपथ दिला देते हैं। शपथ लेने के बाद एक रजिस्टर पर सभी अपने हस्ताक्षर कर अपना-अपना पदभार ग्रहण करते हैं। फूलबाबू ने भी अपने हस्ताक्षर किये और अपना पदभार ग्रहण करते हैं। हस्ताक्षर करते ही उन्हें अहसास होता है कि मानों वह एक हस्ताक्षर करके उन्होंने एक युग का सफ़र तय कर लिया हो। उनके गृह प्रान्त बिहार के हर एक शिक्षित युवा के समान उनका सपना भी था कि वे सरकारी नौकरी ज्वाइन करें। हालांकि उनका सपना तो आई ए एस बनने का था, पर बरसों के संघर्ष के बाद और कई बार असफल होने बाद इस नौकरी का मिलना भी कोई कम बड़ी उपलब्धि नहीं है। वर्षों से उनके नाम के साथ जुड़े बेरोजगार में से "बे" शब्द एक झटके से निकल जाता है।

उन्हें याद आता है कि दूसरे दिन से उन सबका प्रशिक्षण शुरू हो गया जो कि एक महीने का था। प्रशिक्षण में कस्टम एक्ट और मैन्युअल के बारे में जानकारी देने के अलावा मुंबई डॉक्स, एयर कार्गो, एयरपोर्ट, नावा शेवा इत्यादि जगहों, जहाँ पर कि सीमाशुल्क अधिकारियों की तैनाती होती है, पर वहां तैनात अधिकारियों द्वारा व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया था। प्रशिक्षण के बाद उनकी पहली पोस्टिंग मुंबई डॉक्स में ही हुई थी। उन्हें याद है उन दिनों वे एंटोप हिल में एक फ्लैट में पेइंग गेस्ट के रूप में रहा करते थे और कई तरह के बंधनों से काफी परेशान रहा करते थे। इस चलते कई बार तो उनका मन नौकरी छोड़ कर वापस घर जाने का होने लगा था। इसी परेशानी में वे एक सुबह अपने साथी वर्माजी और संजय, जो उन दिनों एक साथ एक फ्लैट में रहते थे, को अपनी समस्या बतायी थी और उन्होंने तुरंत अपने फ्लैट में आने को कहा था। और इस तरह उनकी आवास समस्या का समाधान हुआ था। इसके बाद उनकी तैनाती नावा शेवा हुई थी जहाँ के टाउनशिप में वे कोई डेढ़ वर्षों तक अपने इन्हीं साथियों के साथ रहे थे। इस तरह उनके बीच मैत्री का धागा उत्तरोत्तर मजबूत होता रहा। इसके बाद उनकी तैनाती एयरपोर्ट, कार्गो इत्यादि कई जगहों पर हुई थी और हर जगह उनके बैच के कई साथी कार्यस्थल पर एक-दूसरे का सहयोग करते रहे। उन्हें अभी वो दिन याद है जब उनकी पहली पदोन्नति अधीक्षक के रूप में हुई थी। वो दिन ११ अक्टूबर २००५ था। वे उस समय नावा शेवा में प्रेवेंतिवे आसूचना विभाग में आसूचना अधिकारी (I.O) के रूप में कार्यरत थे। पर इसके बाद अगली प्रोन्नति के लिए उन्हें लम्बा इंतजार करना पड़ा था। फिर आया २४ दिसंबर २०२० का दिन, जब शाम के समय उन्हें सूचना मिली कि वे सहायक आयुक्त बन गए हैं। पर उस आदेश में उनके बैच के कुछ मित्र सहायक आयुक्त नहीं बन पाए थे। अभी कुछ दिन पहले आये पदोन्नति के आदेश के बाद वे सब भी सहायक आयुक्त बन चुके हैं। आज शाम सब इसी ख़ुशी को सेलिब्रेट करने वाले हैं।

तभी एक ट्रक धूल उड़ाता हुआ उनके पास से गुजरता है और वे यादों के भंवर से बाहर आ जाते हैं। ये जानते हुए भी कि ट्रक वाले की कोई गलती नहीं है, वे ट्रक वाले को एक स्वतः स्फूर्त भद्दी सी गाली देते हुए वे अपने ब्लेजर के जेब से रुमाल निकालकर मुंह पोंछने लगते हैं। मुंह पोंछते हुए उनकी नज़र सामने जाती है। देखते हैं सामने से शेखर जी की गाड़ी आ रही है। शायद वे भी उन्हें देख लेते हैं, क्योंकि उनके हाथ दिखाने से पहले ही उनकी गाड़ी धीमी हो जाती है और उनके ठीक बगल में रुक जाती है। गाड़ी उनका ड्राईवर चला रहा है और वे पीछे की सीट पर बैठे हुए हैं। फूल बाबू भी पीछे की सीट पर उनके बगल में बैठ जाते हैं। बैठने के बाद वे पार्टी के बारे में ही बात करने लग जाते हैं, कि कौन-कौन आ रहा है, कि क्या-क्या होगा इत्यादि। चूँकि शनिवार का दिन है, सड़क पर उन्हें घाटकोपर तक ज्यादा ट्रैफिक नहीं मिलती है। पर कुर्ला से आगे बैल बाज़ार में सदा की तरह भयंकर ट्रैफिक मिलती है। फूल बाबू को वे दिन याद आ जाते हैं जब उनकी तैनाती कार्गो या एयरपोर्ट में हुआ करती थी। तब इस बैल बाज़ार, साकी नाका, मरोल नाका के ट्रैफिक में उनकी गाड़ी अक्सर घंटों अटक जाया करती थी। खैर, आज उतनी देर नहीं लगती है। वे करीब ०७:40 बजे साकी नाका होते हुए पेनिन्सुला पहुँच जाते हैं।

पेनिन्सुला ग्रैंड एक चार सितारा होटल है, जो साकी नाका के पास ही स्थित है। ये होटल यात्रियों और पार्टी करने वालों लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय है। वे होटल के लाउंज में पहुंचकर बैच पार्टी की जगह के बारे में पूछते हैं। पता चलता है कि पार्टी छठी मंजिल के कमरा संख्या १ में है। वे लिफ्ट से छठी मंजिल पर पहुँचते हैं। कमरा खोलकर अन्दर आते हैं, पर अभी तक वहां अन्य साथी नहीं पहुंचे हैं। वहां पर एक वेटर सामानों को व्यवस्थित ढंग से लगा रहा है। पूछने पर वो बताता है कि पार्टी यहीं होने वाली है। चूँकि अभी वहां रहने का कोई मतलब नहीं है इसलिए वे वहां से निकलकर वापस लाउंज में आ जाते हैं। लाउंज में ही उनकी मुलाकात तभी मुख्य द्वार से अन्दर आते हुए उनके मित्र सुरेश गोहिल से हो जाती है। चूँकि काफी दिनों बाद मुलाकात हो रही है, इसलिए मुलाकात में काफी गर्मजोशी पैदा हो जाती है। वे फिर लाउंज से बाहर आकर पोर्च से लगी पार्किंग एरिया में चहलकदमी करने लगते हैं। एक ओर ग्राउंड फ्लोर पर ही लगता है शायद शादी का प्रीतिभोज हो रहा है क्योंकि मेहमान काफी सज-धज के साथ आते हुए दिखाई दे रहे हैं। चहलकदमी के दौरान वे अपने-अपने कार्यालय और उनके कामों की चर्चा करने लगते हैं। सुरेश आजकल जी एस टी में हैं और वे जी एस टी के कार्यों के बारे में बता रहे हैं। कुछ ही देर बाद पवई में रहने वाले कुछ साथी एक साथ गाड़ी से उतरते दिखाई देते हैं। सब लोग एक बार फिर बेहद गर्मजोशी के साथ गले मिलते हैं। वे सब एक साथ कमरा संख्या १ में पहुँचते हैं। धीरे-धीरे अन्य साथियों का भी आना शुरू हो जाता है और देखते-देखते कमरा साथियों की खिलखिलाहट से गूंजने लगता है। सब साथी नहीं आ पाते हैं। कुछ साथी पदोन्नति के बाद मुंबई के बाहर तैनाती पर हैं, तो उनका आना संभव नहीं था, तो कुछ साथी इन बीते तीन-चार वर्षों में रिटायर हो चुके हैं। कुछ साथी यहीं रहने के बावजूद निजी या पारिवारिक कारणों से नहीं आ पाए हैं। फिर भी १९-२० साथी कमरे में आ चुके हैं और जाहिर है सब काफी दिनों या यूँ कहें लगभग ३ वर्षों के बाद एक साथ मिलकर बेहद प्रसन्न हैं। सब के हाथों में उनके अपने-अपने प्रिय पेय पदार्थ यथा रंगीन पानी, कोल्ड ड्रिंक या फ्रूट जूस आ जाता है। बैरे गर्मागर्म वेज-नॉन वेज स्नैक्स प्लेट में परोसने लगते हैं। चूँकि फूल बाबू पिछले कई दिनों से साइनस की समस्या से परेशान हैं इसलिए वे अपने लिए सिर्फ एक ग्लास हल्का गर्म पानी मंगवाते हैं। फूल बाबू को याद आता है कि बैच की २५ वीं सालगिरह पर सब एक साथ लोनावाला के एक बंगले में मिले थे और जमकर पार्टी की थी।

कोई ८:30 बजे सुनील जी, जो आजकर हर महफ़िल में एंकरिंग की भूमिका निभाते हैं, कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत भाषण से करने के बाद कुछ पहले से पदोन्नति प्राप्त साथियों से अपना अनुभव बांटने का आग्रह करते हैं ताकि जिन्हें अभी हाल में ही पदोन्नति मिली है उन्हें आने वाली जिम्मेदारियों को समझने में आसानी हो। इसकी शुरुआत करने का आग्रह वे बैच में सबसे पहले पदोन्नति प्राप्त साथी बिपिन से करने को कहते हैं। पदोन्नति के बाद चूँकि उनका स्थानांतरण जम्मू हो गया था तो वे अपने जम्मू के अनुभव को साथियों के साथ साझा करते हैं। इसके बाद भूषण ट्रिब्यूनल में अपने कार्यों के अनुभव को साझा करते हैं। पर उन्होंने एक बात कही जो फूलबाबू को बेहद अच्छी लगती है। वे कहते हैं कि पदोन्नति आगे-पीछे होने से कोई वरिष्ठ या कनिष्ठ नहीं हो जाता है, कि हम सब ९४ बैच के साथी हैं और समान हैं। फूल बाबू सोचने लगते हैं कि काश लोग इस सोच का पालन जीवन के हर क्षेत्र में करने लगें, तो मानव-मानव के बीच जो ये नस्ल, जाति, राष्ट्रीयता. क्षेत्रीयता, पद, रुपये-पैसे इत्यादि को लेकर जो विभेद पैदा हो गया है, वो कभी पैदा नहीं हो। आखिर मूल रूप में हम सब मानव मात्र ही तो हैं। वे इसी सोच में गुम रहते हैं कि माइक उनके हाथ में थमा दी जाती है। पर चूंकि फूलबाबू सार्वजानिक रूप से या औपचारिक रूप में कुछ भी कहने से हिचकते हैं, शायद माइक हाथ में आने पर घबरा भी जाते हैं, और दूसरे, उनके पास अपने अनुभव को साझा करने लायक कुछ ख़ास नहीं है, इसलिए वे माइक विनम्रता के साथ अपने बगल में बैठे संजय को थमा देते हैं।

पर चूंकि अधिकांश साथी अब डांस फ्लोर पर जाने के लिए उतावले हो रहे हैं इसलिए सुनील जी जल्दी-जल्दी इस सैद्धांतिक कार्यक्रम को समाप्त करने की कोशिश करते हैं। फिर भी कई साथी अपना-अपना अनुभव या आने वाली जिम्मेदारियों को लेकर अपनी उत्सुकता के बारे में बताते हैं। सुरेश भाई, जिन्होंने कि अगले साल इसी तरह की मिलन समारोह की जिम्मेदारी का बीड़ा लगभग उठा लिया है, सहित कई साथी इस बात पर जोर देते हैं कि इस तरह की पार्टी प्रत्येक वर्ष हो। लगभग सभी इसी बात पर सहमति जताते हैं, फूल बाबू भी। सैद्धांतिक कार्यक्रम की समाप्ति के साथ जल्दी ही कमरे में पार्टी वाले गीत बजने लगते हैं और डांस के शौकीन मित्रगण जैसे शेखर, वर्मा जी, सचिन, सुनील जी इत्यादि अपने-अपने नृत्य कौशल का प्रदर्शन करने लगते हैं। वे अपने साथ अन्य साथियों को भी खींचने लगते हैं। फूल बाबू को नाचना नहीं आता है, पर कुछ ही देर में वे पाते हैं कि वे उनके द्वारा डांस फ्लोर पर खींच लिए गए हैं। रौ में आकर वे नाचने, मतलब कूदने लगते हैं। हालाँकि नृत्य करने के बजाय कूदने पर उन्हें कोई शर्मिंदगी नहीं है क्योंकि उनके प्रिय अभिनेताओं में से एक जितेन्द्र अपनी हर फिल्म में यही तो करते थे और इसलिए जम्पिंग जैक कहलाते थे। पर लगातार कूदने से जल्दी ही उन्हें अहसास होता है कि उनके बाएं घुटने का दर्द, जो कि पिछले कई महीनों से उन्हें रह-रहकर परेशान कर रहा है, अचानक हल्के से उभर आया है। कहीं दर्द ज्यादा न उभर जाये इसलिए वे कूदना छोड़कर खड़े-खड़े शरीर और हाथ हिलाते हुए नृत्य की लगभग पैरोडी सी करने लगते हैं। वे बीच-बीच में डांस फ्लोर से हटकर वापस सीट पर बैठने की कोशिश भी करते हैं, पर कोई न कोई साथी उन्हें वापस खीच लेता है।

रात के ११ बज गए हैं, पर नृत्य कार्यक्रम है कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा है। और अगर नृत्य के शौक़ीन साथियों का बस चले तो सारी रात चलता ही रहे। फूलबाबू बार-बार घड़ी देख रहे हैं। शायद उन्हें बार-बार घड़ी की ओर

देखते कुछ साथियों को लगता है कि शायद उन्हें देर हो रही है। तभी सुनील जी उन्हें सूचित करते हैं की ५ मिनट में रोटी आ जाएगी और उसके बाद डिनर शुरू हो जाएगा। डिनर करते हुए फूलबाबू को एक कहावत याद आ जाती है... ऊँची दुकान फीका पकवान।" कोई सितारा रेस्तरां न होने के बावजूद सिगरी, जहाँ कि वे और उनके कुछ साथी अक्सर जाते हैं, का खाना इससे अधिक स्वादिष्ट और विविधतापूर्ण रहता है। खैर, मुख्य उद्देश्य तो डिनर करना था भी नहीं। फूलबाबू जल्दी-जल्दी खाना खाने लगते हैं। कुछ साथी भी डिनर करने लगते हैं। पर कुछ पीने वाले अभी भी स्नैक्स और रंगीन पानी में ही लगे हुए हैं। इसी बीच सुनील बाबू गीत-संगीत का कार्यक्रम शुरू कर देते हैं। शुरुआत वे दोस्तों के नाम एक स्वरचित कविता पाठ से करते हैं जिसकी एक पंक्ति है -" पचीस, पचास, पिछतर बस गिनती ही तो है..". फूलबाबू कम से कम इस वक्त इससे सहमत हैं। वे देख रहे हैं कि कमरे में आने से पहले सभी साथी ५० के ऊपर के थे और यहाँ से बाहर जाने के बाद भी ५० के ऊपर के ही रहेंगे, पर फिलहाल इनमें से कोई २५ से ऊपर का नहीं है क्योंकि फ़िलहाल उन्होंने उम्र को धत्ता बता दी है। अपने युवावस्था के साथियों के साथ मिलकर वे मानो फिर से युवा हो गए हैं। जाहिर है उम्र को अगर हम महसूस न करें तो वो सिर्फ गिनती ही है। इसके बाद गाने का दौर शुरू होता है जिसमें बैच से प्रसिद्ध गायकों वर्माजी, सुनील जी और सचिन के अलावा उन्हें आश्चर्यचकित करते हुए सुरेश भाई और बिपिन भी अपने गायन से महफ़िल लूट लेते हैं।

मध्य रात्रि के १२ बज गए हैं। जाने का मन तो किसी का भी नहीं है, पर जाना तो है ही। बेमन से महफ़िल समाप्त कर दी जाती है। फूल बाबू और शेखर सबसे विदा लेकर नीचे पोर्च में आ जाते हैं। पोर्च में अच्छी खासी संख्या में युवक-युवतियों की भीड़ लगी है। सभी यहाँ रात भर डांस करने वाले हैं। मुंबई की नाईट लाइफ इसीलिए तो प्रसिद्ध है। शेखर मजाक में फूलबाबू से इस तरह के नाईट लाइफ का आनंद लेने के बारे में उनकी राय जानना चाह रहे हैं। फूलबाबू मुस्कुराते हुए बस हाथ जोड़ लेते हैं। तभी उनकी गाड़ी पोर्च में आ जाती है। वे गाड़ी में बैठने वाले ही रहते हैं कि उनके बाकी साथी भी मुख्य द्वार से बाहर आकर अपनी-अपनी गाड़ियों के इंतजार में पोर्च में खड़े हो जाते हैं। वे दोनों एक बार फिर सबसे विदा लेकर गाड़ी में बैठ जाते हैं। गाड़ी चल पड़ती है। उनके साथी विदा में हाथ हिला रहे हैं। फूल बाबू को उन विदा देते हाथों को देखकर फिल्म "निकाह" का एक गाना याद आ जाता है और वे थोड़े भावुक हो जाते हैं: ---

अभी अलविदा मत कहो दोस्तों
न जाने कहाँ फिर मुलाक़ात हो
न जाने कहाँ फिर मुलाक़ात हो
क्योंकि,
बीते हुए लम्हों की कसक साथ तो होगी
बीते हुए लम्हों की कसक साथ तो होगी
ख़्वाबों ही में हो चाहे मुलाक़ात तो होगी.....

आदित्य दत्ता
(सहायक निदेशक)
डायरेक्टरेट जनरल ऑफ
एनालिटिक्स एंड रिस्क मैनेजमेंट

अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं है जितना कि सीखने की इच्छा न रखना।

--बेंजामिन फ्रैंकलिन

मन की शुद्धता

मन की सच्ची सफाई ही सच्ची सफाई है।
मन ही प्रमुख है, मन ही हर एक क्रिया व प्रक्रिया का अगुवा है।

कुशल मन से कोई काम करते हैं, उसका फल सुख और शांति होता है।
लेकिन, जब अकुशल मन से कोई काम करते हैं तो दुःख ही मिलता है।
यही सनातन सत्य है। इसलिए मन की गंदगी साफ करनी चाहिए।

मन की गंदगी क्या है?
मन की गंदगी मोह है,
मन की गंदगी राग है,
मन की गंदगी द्वेष है।

मन की ये गंदगियाँ अन्य अनेक गंदगियों को अपनी ओर खींचती ही रहती हैं।जब तक मन में राग, द्वेष मोह के जाले लटक रहे हैं तब तक अनेक मनोविकारों की धूल इन पर जमती ही रहेगी। बाहर-बाहर की सफाई मन के भीतर लटकते हुए इन धूल भरे जालों को दूर नहीं कर सकती। मन को स्वच्छ साफ़ नहीं रख सकती और जब तक मन साफ़ न हो तब तक सच्चे सुख, शांति और समृद्धि की आशा करना व्यर्थ है।

तथागत बुद्ध ने मन की गंदगी साफ करने के लिए और मन को शुद्ध करने के लिए यानी राग द्वेष और मोह से मुक्त करने के लिए और मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा से भरने के लिए उपचार बताया है वह है विपश्यना साधना। विपश्यना साधना द्वारा यानि सत्य के प्रति सतत जागृत रहने के अभ्यास द्वारा मन को स्वच्छ साफ़ कर लेने के बाद ही उसका सजाव-सिंगार किया जा सकता है। सत्य का सहारा लेकर मन को असीम प्रेम और करुणा के भावों से ओतप्रोत कर लेना ही मंगल है।

दिलीप यादवराव लिमजे
मूल्यनिरुपक अधिकारी,
निपटान अनुभाग (सामान्य)

माँ

धूप में छाँव सी,
समन्दर में नाव सी...
है, मेरी माँ।
पानी में प्यास सी,
कोशिशों में आस सी...
है, मेरी माँ।

जुगनू में चमक सी,
फूलों में महक सी...
है, मेरी माँ।
थक जाते हैं सब,
बस नहीं थकती कभी मेरी माँ।
दूर हो जाते हैं सब,
बस दिल में रहती है, मेरी माँ।

स्मृति कुमारी,
स्टेनोग्राफर ग्रेड-1
हिन्दी अनुभाग (सा.)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊

"दरवाजा"

लकड़ी और कीलों से बना, घर में है एक दरवाजा ।
जैसे हों दीवारें सल्तनत, हम प्रजा और ये राजा ।
ताला है मर्यादा इसकी, हम सबका ये दरवाजा ।
दादी से परियों की कहानी, सुनो सुनाता दरवाजा ।
तेज धूप आंधी में हमेशा, पीकर तेल रहा ताजा ।
बाइस्कोप में रविवार को, फिल्म दिखाता दरवाजा।
चरड़ चरड़ आवाज करे, कभी पर से खुलता दरवाजा ।
पापा के कदमों की आहट, झट से सुनता दरवाजा ।
बचपन में मैने खूब बजाया, एक कटोरा का बाजा
भैया के हिस्से आई खाट, मेरे हिस्से दरवाजा ।

सोमवीर सुई
कर सहायक

प्राकृतिक रुप में की गई पक्षियों की फोटोग्राफी

संध्या जाधव
प्रशासनिक अधिकारी

चीत्तीदार काला तीतर (Painted Francolin)
Clicked at Kumbhargaon Near Bhigwan, Maharashtra
on 24.07.2022

तिबोती खंड्या (Three-toed or Oriental Dwarf Kingfisher
Clicked at Shiravali, Chiplun, Maharashtra
on 30.07.2022

दुधराज (Indian Paradise Flycatcher)
Clicked at Ramhini, Near Pune, Maharashtra
on 12.11.2022

नवरंग (Indian Pitta)
Clicked at Shiravali, Chiplun, Maharashtra
on 30.07.22

मॉटल्ड वुड आऊल (Mottle Wood owl)

हल्दी बुलबुल (Yellow Browed Bulbul)

बच्चों की कलाकृतियाँ

प्रेया नयन जोशी
पोती-जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

विराज नयन जोशी
पोता-जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

बच्चों की कलाकृतियाँ

पर्व रितेश चन्दे
नाती-जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रेक्षा रितेश चन्दे
नातिन-जागृति एच. जोशी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

बच्चों की कलाकृतियाँ

Keep The Joy of
Loving The Poor and
Share This Joy with
All You Meet.
Remeber, Works
of Love are
Works of
Peace

- Mother Teresa

रेशमा कुंदर
(पुत्री उदय कुंदर)
कैंटीन सहायक

'मेरे सपनों का भारत'

(प्रथम पुरस्कृत निबंध)

अनेकता में एकता रखने वाला मेरा भारत देश अपने लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए आज जिस उत्साह और उमंग के साथ रोज नये नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा हैं। इतना ही नहीं आज मेरा भारत विश्व पटल पर एक निरंतर जलती हुई दिव्यज्योति की तरह अपनी आभा से विश्व का मार्गदर्शन भी कर रहा है परन्तु फिर भी मैं चाहता हूँ कि मेरा देश विकास की बाधा में उत्पन्न समस्याओं पर काबू पाकर और तेजी से आगे बढ़े।

यहाँ मैं मुख्य पहलुओं पर चर्चा करुँगा जिन पर हम सब साथ मिलकर कार्य करें और मेरे सपनों के भारत को आगे बढ़ाने में मदद करेंगे।

आज मेरा भारत प्रगतिशील पथ पर कार्यरत तो है ही परन्तु मैं चाहता हूँ कि मेरा भारत 'मेरे सपनों' का भारत हो। कुछ मेरे सपने यहाँ निम्न हैं -

1) शिक्षा

आज मेरे देश में आम लोगों तक शिक्षा को पहुँचाने में सरकारें बहुत ही अच्छे-अच्छे माध्यम अपना रही हैं ताकि आम आदमी शिक्षित हो सकें और सर्वांगीण विकास में अहम योगदान निभा सकें। फिर भी मैं चाहूँगा कि मेरे सपनों के भारत में महिला/बालिका शिक्षा पर और थोड़ा जोर दिया जाए ताकि महिला शक्ति का भी देश के विकास में योगदान और बढ़े।

2) जातिवाद :-

वर्तमान परिदृश्य को ध्यान में रखा जाए तो आज काफी हद तक मेरे भारत में जातिवाद खत्म हो चुका है परन्तु मैं फिर भी चाहूँगा कि मेरे सपनों के भारत में यह पूर्णतः खत्म हो जाये ताकि लोगो में भाईचारे के साथ आपसी सम्मान भी बढ़े और मेरे सपनों का भारत सौहार्दपूर्ण सुगम जीवन यापन करे जहाँ सब लोग समान स्तर पर रहें।

3) बेरोजगारी :-

मेरा भारत आज विकासशील देशों की श्रेणी में अपना अहम् योगदान दे रहा है मैं फिर भी चाहूँगा कि मेरे सपनों का भारत सभी लोगों को रोजगार प्रदान करेगा और जल्द ही विकसित देशों की सूची में अपना स्थान प्राप्त करेगा।

4) महिला सशक्तिकरण :-

मेरा भारत आज महिला सशक्तिकरण को लेकर अनेक जन कार्यक्रम/योजनाएँ लेकर आ रहा है और इस क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किए हैं फिर भी मैं चाहूँगा कि मेरे सपनों का भारत ऐसा हो जहाँ महिलाओं को समान दर्जा मिले तथा जब बात सम्मान की हो तो मेरे सपनों के भारत में महिला सम्मान को प्राथमिकता मिले।

5) बलात्कार, दुष्कर्म जैसी गतिविधियाँ :-

मेरा भारत आज महिला सम्मान को इतनी प्राथमिकता देता आया है कि बलात्कार, दुष्कर्म जैसी गतिविधीयों को

काफी कम कर दिया है परन्तु फिर भी मैं चाहूँगा कि मेरे सपनों के भारत में कुछ ऐसी व्यवस्था हो कि महिला स्वयं को दिन-रात किसी भी समय, चाहे कार्यस्थल हो या कोई सार्वजनिक स्थल हो, हर जगह सुरक्षित महसूस करे।

6) भ्रष्टाचार :-

मेरे सपनों का भारत कुछ ऐसा हो कि जहाँ भ्रष्टाचार पूर्णतयाः खत्म हो जाए। आज भ्रष्टाचार धीरे-धीरे मेरे भारत को दीमक की तरह खाता जा रहा है मैं चाहता हूँ मेरे सपनों का भारत जहाँ भ्रष्टाचार मुक्त कार्यशैली हो, आम आदमी को अवसर प्राप्त हो, सरकारी योजनाओं का लाभ आम आदमी तक पहुँचे, लोगों के हित की बात हो । यह संभव हो पाएगा अगर मेरे सपनों के भारत में पूर्णतया भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा।

7) शांतिप्रिय व्यवस्था :-

मेरा भारत आज फूल की तरह खिलता हुआ सा भारत है जिसकी खुशबू आज विश्व पटल पर छायी हुई है। फिर भी मैं चाहूँगा कि मेरे सपनों के भारत में ऐसी व्यवस्था हो जहाँ लोगों के चेहरे पर मुस्कान बरकरार रहे। दुख-सुख में एक-दूसरे का साथ दें और शांतिप्रिय माहौल बरकरार रखने में अहम् योगदान निभाएँ।

8) पर्यावरण :-

मेरा हरा-भरा भारत जो बड़े-बड़े वन, पहाड़ियाँ, जंगल जो हरियाली से आच्छादित हैं लेकिन लोगों की लापरवाही और बढ़ती जनसंख्या से पेड़ों की कटाई हुई है लेकिन इस पर तुरन्त अमल करके इसी हरियाली को और बढ़ाया जा सकता है। मैं चाहता हूँ कि मेरे सपनों के भारत में जहाँ पर्यावरण को इतना महत्व दिया जाए कि चारों तरफ हरियाली बरकरार रहे जो मेरे देश के लोगों के स्वास्थ्य की गुणवत्ता को तो बढ़ाएगा साथ ही मेरे सपनों के भारत की शोभा और सौंदर्य को भी चार चाँद लगा देगा।

उपरोक्त मुख्य विषयों मुद्दों के अलावा भी मेरे भारत ने अपनी तमाम सामाजिक या नैतिक परंपराएँ निभाई हैं जो मेरे भारत को निरंतर आगे बढ़ने में अहम् योगदान देती हैं परन्तु फिर भी मैं मेरे भारत के तमाम लोगों से ये अपील करना चाहूँगा कि अपने आस-पास के क्षेत्र के सौहार्द को ध्यान मे रखें हालाँकि आज बढ़ती हुई जीवन जीने की कार्यशैली जो मेरे भारत को कभी-कभी विकास के पथ से हटाने की कोशिश करती है मगर अगर सब लोग एकजुट होकर मेरे भारत को एकता, अखण्डता, शांति, सौहार्द, जहाँ नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिले, विकास के नए कीर्तिमान छूने वाला और जल्द ही विकसित देशों की सूची मे अपना नाम दर्ज करवाएगा और अब मेरा भारत एक कुशल-मंगल मेरे सपनों का भारत होगा।

अमित कुमार यादव
कर सहायक

बेरोजगारी की समस्या एवं समाधान

(द्वितीय पुरस्कृत निबंध)

आत्मविश्वास और हौसला अभी नहीं हारे हैं, ये अलग बात है कि हम बेरोजगारी के मारे हैं। बेरोजगारी आखिर है क्या?

- फ्लोरेंस के अनुसार - बेरोजगारी व्यक्तियों की निष्क्रियता के रूप में परिभाषित करता है, जो कार्य करने के इच्छुक एवं योग्य होते हैं, पर उन्हें कार्य नहीं मिलता है।

- वर्ष 1976 में गठित भगवती समिति के अनुसार बेरोजगारी की समस्या, उस परिस्थिति को कहते हैं जिसमें कार्य करने के योग्य एवं इच्छुक व्यक्ति बेकार रहते हैं। बेरोजगारी का प्रयोग प्रायः अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य के मापक के रूप में किया जाता है और बेरोजगारी को बेरोजगारी दर द्वारा मापा जाता है।

बेरोजगारी दर - रोजगार योग्य श्रमिक कुल श्रम शक्ति

देश की आर्थिक गतिविधियों पर नजर रखने वाली संस्था सेन्टर ऑफ मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी के अनुसार अप्रैल 2020 में देश में 12.2 करोड़ लोग बेरोजगार हुए जिनमें 75% लोग छोटे व्यापारी और दिहाड़ी मजदूर थे। मई 2019 में देश के श्रम मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में बेरोजगारी पिछले 45 साल के उच्चतम स्तर तक पहुँच गई थी। इन आँकड़ों के मुताबिक इस दौरान देश में बेरोजगारी दर 6.1% थी। आखिल भारतीय स्तर पर बेरोजगारी पुरुषों में 6.2% और महिलाओं में 5.7% थी। National Sample Survey office के अनुसार वर्ष 2011-12 मे 472.5 मिलियन लोग रोजगार में थे 2017-18 में यह आँकड़ा 457 मिलियन हो गया। देश में बढ़ रही बेरोजगारी की समस्या के कारण -

1) **जनसंख्या वृद्धि :** देश में वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 2.1% प्रतिवर्ष है । सरकारें बढ़ती जनसंख्या का बहाना बनाकर, बेरोजगारी जैसे मौलिक सवालों से पल्ला झाड़ लेती हैं। लेकिन हम भारत से भी ज्यादा जनसंख्या वाले देश चीन के विकास को नजरअंदाज कर जाते हैं, जहाँ बेरोजगारी दर अमूमन 4% के करीब रहता है और भारत में इससे कहीं आगे। दरअसल भारत को जनसंख्या को बोझ समझने के बजाए इसे संसाधन के रुप में समझना होगा। तभी हम इनका इस्तेमाल देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में कर सकते हैं।

2) **दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति :** पूँजीवादी युग में नौकरियों का अति विशिष्ट महत्व है। देश की शिक्षा पद्धति इन नौकरियों के हिसाब से सही प्रशिक्षण और विशेषता प्रदान नहीं करती। गुणवत्तापरक शिक्षा नहीं होने की वजह से रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं।

3) **कृषि का प्रभुत्व :** देश की आबादी का आधा कार्यबल कृषि में कार्यरत है। भारत की अर्थव्यवस्था अविकसित है एवं यह मौसमी रोजगार प्रदान करती है। जानकारों का मानना है कि पिछले कई सालों में रोजगार की संख्या में गिरावट, महिलाओं के श्रमिक के कृषि कार्य छोड़ने की वजह से हुई है। सन 2011-12 से 2017-18 के बीच 37 मिलियन लोगों को काम से हाथ धोना पड़ा जिसमें 25 मिलियन महिला श्रमिक थे।

4) **अन्य कारण :** देश में तेजी से बदली बेरोजगारी के कई कारण हैं जिनमें, नोटबंदी, जीएसटी, कोरोना महामारी, रुस-यूक्रेन युद्ध, मध्य एसियाई देशों में समय-समय पर होते संघर्ष जिम्मेवार हैं।

बेरोजगारी दूर करने के सरकार के प्रयास :-

1) **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना :-**

इस योजना के तहत देश में रोजगार सृजन के उद्देश्य लिए विनिर्माण क्षेत्र के लिए 25 लाख रु. और सेवा क्षेत्र के लिए 10 लाख रु. लोन मिलते हैं।

2) **प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना :**

इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश के युवा बेरोजगारों को देश की औद्योगिक कौशल से लैस करना है। इसके तहत सन् 2022 के अंत तक 50 मिलियन लोगों को कुशल श्रमिक बनाना है।

3) **मनरेगा :**

महात्मा गांधी रोजगार गारंटी कानून के तहत ग्रामीण, इलाकों के अकुशल श्रमिकों को 100 दिनों के रोजगार की गारंटी है जिनमें 33% महिलाओं का होना अनिवार्य है।

4) **अन्य योजनाएँ:**

मेक इन इंडिया के तहत सरकार देश की औद्योगिक इकाइयों को मजबूत बनाना है। व्यापार सुगमता, सरल लाइसेसिंग और तकनीकों का सही इस्तेमाल इस योजना का मुख्य उद्देश्य हैं। इसके अलावा सरकार दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम, स्टार्टअप इंडिया, स्टैण्डअप इंडिया, मुद्रा योजना जैसी योजनाओं के जरिए रोजगार के अवसर प्रदान करती है। फिर भी सरकार के वो सारे प्रयास सीमित हैं। सार्वजनिक क्षेत्रों में नौकरियों को बढ़ाने की आवश्यकता है। रेलवे जैसे बड़े सेक्टर्स में नौकरियों को खत्म किया जाना चिंता का विषय है।

दूसरी ओर ये सारे प्रयास सरकार अकेले पूर्ण नहीं कर सकती इसके लिए देश में उद्यमिता की भावना बढ़ायी जानी चाहिए। सरकार रोजगार प्रदान करने वाली कोई एजेंसी नहीं है बल्कि यह एक प्राधिकरण है जो देश में कानून के जरिए एक ऐसा वातावरण बनाती हैं, जहाँ सुविधाओं, अवसरों की असमानताओं को कम करना है। इसके लिहाज से सरकार देश में ऐसा वातावरण बनाए जहाँ रोजगार योग्य युवा अपने कौशल का 100% उपयोग कर सकें। रोजगार विहीन और स्थिर मजदूरी वाला विकास देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर करता है साथ ही यह राजनीतिक अस्थिरता एवं देश मे संकट को दर्शाता है। वर्तमान परिस्थितियों में जरूरी है कि सरकार रोजगार योग्य एवं जरूरतमंद युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान कराए ताकि राष्ट्र तेजी से एक मजबूत अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो सके। और अंत में कुछ पंक्तियाँ:-

चेहरे पर धूल लगी माना,
माथा फूटा माना लेकिन,
गालों पर थप्पड खाए हैं।
जबड़ा टूटा माना लेकिन,
सांसे उखड़ रही हैं और
धक्का लगता धड़कन से।
लो मान लिया कि काँप गया है,
पूर्ण बदन अंतरमन से।
आँखों मे अंगारे, नथुलों मे तुफां लाऊंगा। गिर-गिरकर इस धरती पर, मैं फिर खड़ा हो जाऊँगा। लो भींच लिया मुट्ठी में तारा, नगर में ढोल पिटा दो जी। कि अंधेरे दो लाख घने, पर अंधेरे अनंत नहीं। गिर जाना मेरा अंत नहीं, गिर जाना मेरा अंत नहीं।

मुकेश कुमार
(कर सहायक)

बेरोजगारी की समस्या एवं समाधान

(तृतीय पुरस्कृत निबंध)

बेरोजगारी की समस्या आज हम सभी देशवासियों एवं देश के लिए बहुत ही गंभीर विषय बन गई है।आज हमारे पास अत्याधुनिक औजारों, तकनीकियों नई पीढ़ियों के कार्य करने के नवीनतम एवं कुशलता के कारण आज काम बहुत ही तेजी से एवं कम से कम मानव संसाधनों मे ही निपटाया जा रहा है। आज विज्ञान के बढ़ते विकास और मानक स्तरों पर अनुसंधान के बाद इतनी तेजी से सभी चीजों का विकास हो रहा है कि यह लाजमी है कि हमारे काम करने के तरीकों एवं उसमें उपयोग होने वाले संसाधनों में बहुत ही तेजी से बदलाव हो रहे हैं। इस समस्या का उत्तरदायित्व सरकार, क्षेत्रीय सरकार एवं हम सभी पर है। हमारे देश से जितने कल-कारखानों की जरुरत है, जिससे हमारे प्रदेश/देश की पूरी जनसंख्या के लिए सारी उपयोगी चीजों का उत्पादन और उसकी व्यवस्था यहीं हो सके अर्थात हमें किसी भी चीज के लिए बाहरी आयातों या किसी भी प्रकार की अन्य चीजों पर निर्भर नहीं रहना पड़े ऐसी व्यवस्था करनी होगी। बेरोजगारी की इस समस्या के कारण लोगों का व्यक्तिगत जीवन एवं सामाजिक स्थिति बहुत ही ज्यादा प्रभावित है। इस समस्या के कारण लोगों को निजी आवास वाले क्षेत्र से दूसरे प्रदेशों में लगातार पलायन करना पड़ रहा है । व्यक्ति अपने परिजन, सगे-सबंधी सबको छोड़कर अपनी आजीविका के लिए दूसरे प्रदेश जाते हैं, परन्तु वहाँ भी उनकी जरुरत के हिसाब से रोजगार नहीं मिल पाने के कारण समस्याओं के झंझावातों से आजीवन संघर्ष करना पड़ता है क्योंकि पलायन दूसरे प्रदेश में होने के कारण उन्हें दो जगह परिवार का भरण-पोषण करना पड़ता है। परिणामस्वरुप उनकी स्थिति हमेशा लाचारों जैसी ही बनी रहती है।

इसके अलावा बेरोजगारी की समस्या के लिए बहुत सारे पहलू जिम्मेदार हैं और मेरे हिसाब से यह समस्या किसी व्यक्ति विशेष के लिए, समाज के लिए, प्रदेश के लिए एवं देश के लिए अन्य सभी समस्याओं के मुकाबले बहुत ही महत्वपूर्ण एवं गंभीर समस्या आज बन चुकी है।

बेरोजगारी की समस्या का समाधान :-

इस समस्या के समाधान के लिए सबसे पहले हमारे युवाओं की मानसिक स्थिति मे अविलंब परिवर्तन करने की जरुरत है। अर्थात् हम सभी युवाओं को अब देश के ऊपर निर्भरता को कम करना होगा और अपनी कुशलता को बढ़ाना होगा और इसकी जिम्मेदारी खुद लेनी होगी क्योंकि अगर हम व्यावहारिक रुप से सोचें कि क्या देश के लिए संभव है कि हर व्यक्ति को नौकरी दी जा सके, मेरे हिसाब से तो व्यावहारिकता के दृष्टिकोण से यह संभव नहीं है।

तो हमे युवाओं को रोजगार पाने के बजाय रोजगार के सृजन के लिए एवं आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रशिक्षित करना होगा चूँकि हमारे देश की जनसंख्या के ऊपर अगर गौर करें तो सबसे ज्यादा जनसंख्या हम युवाओं की ही है और सबसे महत्वपूर्ण बात आज डिजिटल क्रांति के कारण रोजगार पाना या सृजन करना इतना आसान हो गया है जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते । अब जरूरत केवल हमारे देश के युवाओं को और बाकी सभी लोगों को नौकरी के अलावा उद्यमी बनाने एवं अपने-अपने कार्य में कुशलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने की है ताकि असमानताओं को मिटाया जा सके एवं देश को समृद्ध बनाया जा सके।

इसके अलावा हमारी सरकार एवं प्रदेश के प्रतिनिधियों की भी यह जिम्मेदारी है कि जितना अधिकतम संभव हो सके, कल कारखानों को स्थापित करवाएं एवं अन्य सभी संभव उपायों के ऊपर काम करें ताकि हमारे देश के अधिकतम लोगों को रोजगार दिया जा सके। सरकार एवं सिस्टम को चाहिए की सभी गतिविधियों को अधिकतम पारदर्शी सिस्टम बनाऐं ताकि उसका फायदा सभी लोगों को मिल सके और लोगों को रोजगार मिलने की दिशा में लाभ मिल सके।

विपिन कुमार,
कार्यकारी सहायक,
निजी सचिव, आयुक्त (निर्यात)

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़े के समापन /पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़े में विजेताओं को सम्मानित/पुरस्कृत करने की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़े में विजेताओं को सम्मानित/पुरस्कृत करने की झलकियाँ

"युवावर्ग और विदेश"

युवावर्ग से तात्पर्य है युवा श्रेणी के व्यक्ति या किशोर से एवं विदेश का अर्थ है अपने देश के बाहर या अपने देश के अतिरिक्त अन्य देश। पृथ्वी पर अनेक देश हैं। जनता एक देश से दूसरे देश को को प्रायः जाती रहती है, यह कार्य सदियों से हो रहा है। युवाओं का विदेश जाना स्वाभाविक है, क्योंकि यह एक ऐसी उम्र होती है, जिसमें घूमने में न तो थकान लगती है और जिज्ञासा भी अलग ही होती है।

आज के समय में युवावर्ग अत्यधिक संख्या में विदेशों की यात्रा कर रहे हैं। इसके अनेक कारण हैं कुछ तो रोजगार के लिए जाते हैं कुछ शिक्षा-दीक्षा के लिए जाते हैं, कुछ मनोरंजन एवं घूमने के लिए जाते हैं, कुछ स्थाई रुप से नागरिकता प्राप्त करने एवं वहीं पर बस (inhabit) जाने के लिए जाते हैं, एवं इसके अतिरिक्त वे अनेक अन्य कारणों से भी जाते हैं। जब अपने देश में जनसंख्या अधिक एवं संसाधन कम हो जाते हैं तो जनता दूसरे देश में पलायन करती है। कभी कभी ऐसा होता है कि जीवन जीने एवं विकास के लिए जो सुविधाएँ जरुरी होती हैं वे युवाओं को सुलभ नहीं हो पातीं, अतः वे अन्य देशों की तरफ आकर्षित होते हैं।

जब भारतीय नौजवान विदेश जाते हैं तथा वहीं अपना काम धंधा करते हैं, तो इस घटना को भारतीय आप्रवासन (Indian Disapora) कहते हैं। अधिकांश भारतीय युवा रोजगार के उद्देश्य से विदेश जाते हैं। विदेश में नौकरी करने, या रोजगार (काम धंधा) या व्यापार करने के कई लाभ हैं। लोगों की आय (Salary) बढ़ जाती है, क्योंकि रुपया की तुलना में कई देशों की मुद्राएँ ज्यादा मूल्य की होती हैं, लोगों को अच्छी सुविधाएं मिलती हैं, उन्हें सम्मान मिलता है, उन्हें आगे बढ़ने एवं साहसिक कार्य करने के अवसर भी दिए जाते हैं। Indian Diaspora से भारत का विदेशों से अच्छा संबंध भी स्थापित हुआ है। इसके कारण Indian Diaspora के कारण भारत एवं अन्य देशों के बीच व्यापार, आपसी सहयोग एवं मैत्री की भावना बढ़ी है, भारत एवं अन्य देशों के बीच आपसी संघर्ष जैसे युद्ध, तनाव, हिंसा आदि में अत्याधिक कमी आई है या इनकी संभावना लगभग खत्म हो गई है। इन संबंधों से भारत ने वसुधैव कुटुम्बकम एवं धर्मनिरपेक्षता को और मजबूती प्रदान की है। इसके कारण भारत में पर्यटकों की संख्या मे भारी वृद्धि होने से देश की सकल घरेलू उत्पाद (GDP) को नई ऊँचाई मिली है।

भारतीय युवा विदेशों में अपनी प्रतिभा का डंका बजा रहे हैं और अपने परिवार तथा अपने देश का नाम रौशन कर रहे हैं। भारतीय आप्रवास (Indian Diaspora) के कारण भारत का अंतर्राष्ट्रीय मंच पर एक विशेष स्थान एवं महत्व है।

विदेश जाने के अनेक घाटे भी हैं जब हम दूसरे देशों में कार्य करेंगे तो उनकी GDP बढ़ेगी, उनका विकास होगा, उनका राष्ट्र प्रगति करेगा और हमारा देश ज्यों का त्यों रह जाएगा। अपने क्षेत्र का विकास नहीं हो पाएगा क्योंकि हम विदेश में रहेंगे और जहाँ रहेंगे वही पर विकास करेंगे।

यही कारण है कि आज अमेरिका एवं अन्य विकसित राष्ट्र हमसे आगे हैं। भारतीय प्रतिभा अर्थात् वैज्ञानिक एवं इंजीनियर अमेरिका में बस गए, वहीं अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं, अमेरिकी अंतरिक्ष अभियान एवं अमेरिकन परमाणु तकनीकी का विकास हमसे कहीं ज्यादा है। अमेरिका, अंतरिक्ष तकनीकी परमाणु तकनीकी एवं सूचना प्रसारण के क्षेत्र में एवं अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में तथा अन्य लगभग कई क्षेत्रों में हमसे (भारत से) आगे है और हम वैसे के वैसे रह गए। सीधी सी बात है आप जिसके लिए दिन-रात परिश्रम करेंगे उसी का विकास होगा।

उक्त परिस्थितियों को देखते हुए उचित कदम यही होगा की होमी जे. भाभा एवं विक्रम साराभाई की तरह वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर आदि अपने देश में कार्य करें, अपने देश में संसाधनों को बढ़ाएं, अपने देश की प्रगति में अपनी प्रतिभा का प्रयोग करें, जिससे अपने देश (भारत) का विकास हो, भारतीय अंतरिक्ष तकनीकी, परमाणु तकनीकी आगे बढ़े तथा भारत एक विकसित राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा हो जाए।

उक्त सोच को तभी बढ़ावा मिलेगा जब भारतीय राजनीतिक नेता भी वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, डॉक्टरों, दार्शनिकों आदि के साथ मिल-जुलकर, आपसी सहयोग बनाते हुए, सम्मिलित रुप से कार्य करेंगे। सर्वप्रथम देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को खत्म करें। देश के संसाधनों में वृद्धि करें। यह सब तभी संभव होगा जब राजनीतिक नेता अपना पूरा सहयोग प्रदान करेंगे क्योंकि भारत में राजनीति के बिना एक भी महान/बड़ा कार्य नहीं होता है। भारत में राजनीति ही सबसे ज्यादा शक्तिशाली है, और राजनीतिक नेताओं का ही बोलबाला है। अतः जब नेता अपने प्रतिभावान युवाओं के साथ खुद मिलजुल कर अपना पूरा सहयोग प्रदान करेंगे तभी राष्ट्र की तरक्की संभव है।

निष्कर्ष रुप से हम कह सकते हैं कि युवाओं का विदेश जाना, लाभदायक भी है और हानिकारक भी। हानिकारक ज्यादा इसलिए है कि इसके कारण अपना देश पीछे हट जाता है। यह ठीक उसी तरह है, जैसे हम अपना घर छोड़कर बाहर चले जाते हैं, घर बंद कर देते हैं, तो घर में, घर की वस्तुओं में जंग लग जाता है। हरियाली, खुशहाली उसी खेत में उतनी ही ज्यादा दिखेगी, जिसमें ज्यादा एवं दिन-रात परिश्रम करते हुए अनाज बोए जाते हैं और जिस खेत का मालिक उसे छोड़कर चला गया है, वह कैसा होगा? ऊसर, बंजर एवं कटीली झाड़ियों से भरा होगा। इसलिए सर्वप्रथम अपना और अपने घर/ देश का विकास करें, बाद में दूसरों के बारे में सोचें।

धर्मवीर चौहान
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सीमाशुल्क मुंबई, अंचल-I

अगर हौंसले बुलन्द हों तो पर्वत भी एक मिट्टी का ढेर लगता है।

.... छत्रपती शिवाजी महाराज

कौन हूँ मैं

आंसू की बूंद हूं मैं,
एक दिन सूख ही जाऊंगी।
गुलाब की पंखुड़ी हूँ मैं,
हर तरफ महक फैलाऊंगी।
बारिश का पानी हूँ मैं,
सब भीगो जाऊंगी।
हवा का झोंका हूँ मैं,
गर्मी से राहत दिलाऊंगी।

सूरज की किरण हूँ मैं
दुनिया को रोशन कर जाऊंगी।
ज्वाला की अगन हूँ मैं,
बुराइयों को भस्म कर दिखाऊंगी।
समुद्र की लहर हूँ मैं,
ऊंची उठती जाऊंगी।
नीला आसमान हूँ मैं,
सारी दुनिया को ढक जाऊंगी।
चांद की चांदनी हूँ मैं,
शीतलता का तोहफा लाऊंगी।
धरती सी सहज हूँ मैं,
हर तनाव समेट जाऊंगी।
फूलों सी कोमल हूँ मैं,
खुशियों के रंग बिखराऊंगी।
गंगा सी पवित्र हूँ मैं,
हर पाप निगल जाऊंगी।
जब पूछेगा कोई मुझसे,
कि भला कौन हूँ मैं।
उम्मीद के दामन को थामे,
मैं अपनी परिभाषा बतलाऊंगी।
कि एक लड़की हूँ मैं,
प्रकृति का हर गुण अपनाऊंगी।
पर डर है ये सब करके भी,
नाज़ुक और कमज़ोर ही कहलाऊंगी।

आयुषी मित्तल
(कर सहायक)
कार्मिक एवं स्थापना विभाग

वित्तीय साक्षरता

पैसे बचाओ। पैसे बचाओ।। हर मध्यम वर्गीय माता-पिता अपने बच्चों को समझाते हैं। मगर क्या कोई हमें यह बताता है कि पैसे कैसे बचाओ और उनका क्या करो? हमें विद्यालयों में पढ़ाते हैं अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान, गणित, आदि। मगर, वित्त जो हमारे जीवन का अहम हिस्सा है क्या उसका प्रबंधन हमें पढ़ाया जाता है?

मेरा भी यही सवाल और यही हाल था। जबसे मेरी नौकरी लगी और मुझे सरकारी आवास मिला, मेरी यह बात समझ आई कि अब मुझे अपने सारे बिल खुद ही चुकाने हैं, खुद ही अपनी सारी जिम्मेदारियाँ उठानी हैं। इसी के चलते मैंने यूट्यूब पर कुछ वित्तीय शिक्षा की विडियोस देखनी शुरू कीं। मेरा रुझान बढ़ने लगा तो मैंने किताबें भी पढ़ना शुरु किया जिसकी वजह से मेरा वित्त के प्रति नजरिया काफी परिवर्तित हुआ।

हम आजकल का सोशल मीडिया वाला जीवन जी रहे हैं जहाँ हमारा ध्यान कई बार उसमें चल रहे दिखावे की ओर चला जाता है। हम भी उनकी तरह ही बनने की कोशिश में कब अपनी सैलरी उड़ा देते हैं पता भी नहीं चलता। फिर हम उसी कुंडली मे फँस कर रह जाते हैं।

पुरानी कहावत है ''जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारने चाहिये। मैंने पाया कि यह हमारे वित्तीय संदर्भ में समझदार होने की ओर पहला कदम है। इसके लिए हम 50-20-30 बजट नियम को अपना सकते हैं। जो भी हमें महीने में वेतन मिलता है उसका 50% हमें अपनी जरुरतों जैसे किराया, बिजली, पानी, फीस आदि पर खर्च करना चाहिए। 20% हमें अपनी इच्छाओं जैसे मोबाइल फोन, घूमना, कपड़ों इत्यादि पर खर्च कर सकते हैं और शेष 30% हमें बचत या निवेश करना चाहिये। इस नियम के कठोरता से पालन की आवश्यकता नहीं है। यह एक रुप रेखा है जिसका अनुसरण करके हम खुद को वित्तीय बोझ से मुक्त कर सकते हैं। ऐसा करने से हमारे अंदर निवेश करने की आदत के साथ-साथ अनुशासन भी आता है।

निवेश करना क्यों आवश्यक है? ''सखी सइयाँ तो खूब ही कमात हैं, महँगाई डायन खाये जात है।'', इसी पंक्ति में इस प्रश्न का उत्तर छिपा हुआ है। यदि हम अपने पैसे बैंक के बचत खाते में रखते हैं तो महँगाई के चलते हम अपने पैसे साल दर साल खो रहे होते हैं। उदाहरण -

महँगाई की दर - 7%

बचत खाते की ब्याज दर - 2%

खाते में जमा राशि - 100 रु.

अगले साल - 7% - 2% = 5%

100-5 = 95 रु.

इसका मतलब यह नहीं कि आपके 100 रु. की नोट अब 95 रु. की हो गई है मगर यह कि आपके 100 रु. का मूल्य अब 95 रु. हो गया है। आप पहले एक कलम 100 रु. में खरीदते थे अब महँगाई के कारण आपको उसके लिए ज्यादा पैसे देने पड़ रहे हैं। यहाँ पर आपके काम आता है निवेश। यह हमारे पैसे के मूल्य को कम होने से बचाता है, उन्हें बढ़ने में मदद करता है और हमारे भीतर बचत करने की आदत को भी विकसित करता है। यह सब जानकारी पाठकों के साथ साझा करने का मेरा लक्ष्य यही था कि क्यों न हम अपनी शिक्षा प्रणाली को दोष देने के बजाए खुद पर यह जिम्मेदारी डालें। आजकल की इंटरनेट की इस दुनिया में खुद को वित्तीय शिक्षा देना काफी आसान है। हमें बस जागरुक होने और दिलचस्पी लेने की आवश्यकता है।

प्राची जायसवाल
आयुक्त (लेखा परीक्षा) की
निजी सहायक

सीमाशुल्क, मुंबई के अधिकारियों की खेल गतिविधियों की झलकियाँ

सीमाशुल्क, मुंबई के अधिकारियों की खेल गतिविधियों की झलकियाँ

राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह की झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम की झलकियाँ

सीमाशुल्क, मुंबई में आयोजित रंगोली कार्यक्रम की झलकियाँ

सफलता का रहस्य

सफलता का रहस्य क्या है ? यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब हर वर्ग के लोग, हर उम्र के लोग ढूंढते रहते हैं, और हम इसके जवाब में कुछ ऐसा चाहते हैं कि कोई भी हमें ये बता दे कि हम लोग किसी भी क्षेत्र में फटाफट अर्थात् जल्दी से कैसे सफल हो जाएँ यानी कि ऐसी शॉर्टकट विधि जो हमें तुरंत सफल बना दे।

दूसरी तरफ हम ये गौर करें कि जब हम कम उम्र यानी 20-25 वर्ष की अवस्था में होते हैं तो हमारे मन में ढेर सारे सफल सपने होते हैं और जिसे पाने के लिए हम सभी लोग अपने-अपने स्तर पर बहुत ही कड़ी मेहनत करते हैं। हमारे अंदर काफी हर्षोल्लास और जोश होता है और ऐसा लगता है कि हमें जिन्दगी में सफल होने से कोई नहीं रोक सकता और हम लगातार जी-तोड़ मेहनत करते हैं और काम में जुटे रहते हैं, लेकिन क्या हम लोगों ने गौर किया है कि हम लोगों में से लगभग 95% लोग 60-65 की उम्र आते-आते असफल महसूस करने लगते हैं और ऐसा लगता है केवल 5% लोग ही इस दुनिया में अपनी-अपनी जिन्दगी में सफल हो पाए। अखिर ये 95% लोगों के साथ ऐसा क्या हुआ कि वे सफल नहीं हो पाए जबकि जीवन के शुरुआती दौर में हम सभी लोगों में जीवन के प्रति एक सकारात्मक चेतना, विश्वास, लगन, जोश, सब कुछ था। फिर भी ऐसा क्या हुआ कि हम अन्ततः अपनी जिन्दगी में सफल नहीं हो पाए?

अगर हम लोग शांतिपूर्वक अवलोकन करें कि इन असफलताओं के पीछे क्या कारण है तो पता चलता है कि ऐसा केवल अस्पष्ट लक्ष्यों के कारण हुआ है।

सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि सभी लोगों के लिए अपने-अपने जीवन में सफलता के अलग अलग मायने होते हैं यानी जो भी व्यक्ति अपने जीवन में जो कुछ बनना चाहे, जो कुछ पाना चाहे, चाहे वह छोटा हो या बड़ा और वह अगर उस चीज को पा लेता है या बन जाता है तो यह उस व्यक्ति की सफलता है और उससे बड़ा सुख, शांति दूसरा कुछ उसे दे ही नहीं सकता।

हमारे मानव मस्तिष्क में हमेशा सैकड़ों विचारों का उद्गम होता रहता है क्योंकि, यह चंचल है और हमारा मानव मस्तिष्क एक ऐसा महादेश है जिसका आज तक अन्वेषण नहीं हुआ है क्योंकि इसमें असीमित क्षमता है। हमें अपने मस्तिष्क में चल रहे एक समय में एक से अधिक विचारों को नियंत्रित करना होगा और अपने हिसाब से सोच-समझ कर अपने लिए लक्ष्य तय करना होगा और एक समय में एक ही लक्ष्य के लिए काम करना होगा। ध्यान रहे कि बार-बार मन के भटकाव को नियंत्रित करना होगा नहीं तो हम अपने मूल लक्ष्य के ऊपर सही दिशा में काम नहीं कर पाएंगे।

अब जब एक बार हमारा लक्ष्य निर्धारित हो जाए तो उस दिशा में हमें व्यावहारिक रुप से काम करना होगा

और अपना शत-प्रतिशत ध्यान काम पर केंद्रित करना होगा।

ज्यादातर ऐसा देखा जाता है कि हमें सफलता पाने के लिए आवश्यक सभी कारक सैद्धांतिक रुप से पता होते हैं और उसके अनुरुप हम शुरुआती दौर में व्यावहारिक रुप से काम को शुरु भी कर देते हैं, लेकिन बीच में ही चंचल मन के कारण लक्ष्य का भटकाव हो जाता है और हम उसके अतिरिक्त भी कोई दूसरा काम साथ-साथ करने लगते हैं। जिसके कारण हमारा ध्यान किसी भी काम पर केंद्रित नहीं हो पाता है और हम कड़ी मेहनत करते रहते हैं, लेकिन अन्ततः हमें असफलता ही हाथ लगती है।

इसका मतलब यह है कि पहली बात तो हमारा लक्ष्य निर्धारित नहीं होता और हम बार-बार अपने लक्ष्यों को बदलते रहते हैं। साथ ही हमें ऐसा लगता है कि हमें सब कुछ पता है और हमें सारे नियम, कदम उससे जुड़ी चीजें मालूम होती भी हैं, लेकिन मुद्दे की बात यह है कि हम सब कुछ मालूम होते हुए भी उसे व्यावहारिक रुप से सतत लागू नहीं करते हैं और हमें फलस्वरुप निराशा हाथ लगती है।

उदाहरण के तौर पर देखें कि हम सभी को मालूम है कि हमें स्वस्थ रहने के लिए नियमित रुप से व्यायाम करना होगा एवं पौष्टिक आहार का सेवन करना होगा, लेकिन हम लोग व्यावहारिक रुप से कुछ दिनों के लिए आरंभ तो करते हैं, लेकिन उसे लगातार नहीं करते। बीच में ही व्यायाम छोड़ देते है। फलतः इसका हमारे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

निष्कर्षतः हमें अपनी सफलता को सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट निश्चित लक्ष्य एवं उस दिशा में लगातार उचित प्रयास करने होंगे। तब हमें सफलता दिलाने में प्रकृति की सारी शक्ति मदद करेगी।

❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊❊

प्रशस्तिका कुमारी
पत्नी, श्री विपिन कुमार
कार्यकारी सहायक,
निजी सचिव, आयुक्त (निर्यात)

खुद पर काबू पा लेना ही मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण जीत होती है।
.... प्लेटो

गजलें

चन्द सपने क्या पले फुटपाथ पर।
आ गए कदमों तले फुटपाथ पर।

हम जरा तिरछा चले फुटपाथ पर।
पाँव गफलत में जले फुटपाथ पर।

गाँव की मिट्टी में हैं कुछ नौनिहाल,
पल रहे कुछ लाड़ले फुटपाथ पर।

क्यों हिकारत से इन्हें देखा करें,
रह रहे अच्छे भले फुटपाथ पर।

कितनी आसानी से सुलझे हैं यहाँ,
जिन्दगी के मसअले फुटपाथ पर।

कीच बँगलों की तरफ़ बहने लगी,
कोई इसको रोक ले फुटपाथ पर।

तू अँधेरा बो रहा था उस तरफ़,
रोशनी है देख ले फुटपाथ पर।

मत नज़र-अन्दाज़ कर, पछतायेगा,
उग रहे हैं ज़लज़ले फुटपाथ पर।

जब सड़क से जुड़ गईं सड़कें नई,
बढ़ गए हैं फ़ासले फुटपाथ पर।

इस से बेहतर आशियाना है कहाँ,
आ जगह कुछ घेर ले फुटपाथ पर।

देख 'चन्दन' हर तरफ़ बिखरे हुए,
ज़िन्दगी के वलवले फुटपाथ पर।

थके हाथ जब कँपकपाने लगेंगे।
कहाँ ठीक से फिर निशाने लगेंगे।

❋❋❋❋❋❋❋❋❋❋

किसे थी खबर ऐन मंज़िल से पहले,
थकन से कदम डगमगाने लगेंगे।

हुई शाम दिल इक शज़र हो रहा है,
वो यादों के पंछी भी आने लगेंगे।

हमारी मुलाकात कब तक टलेगी,
तुम्हें और कितने बहाने लगेंगे।

खुशी के परिन्दे न लौटे जहाँ पर,
वहीं दर्द के आशियाने लगेंगे।

मेरा बर्फ़ का घर बचाने की खातिर,
कड़ी धूप के शामियाने लगेंगे।

हमें वो भी भूले जिन्होंने कहा था,
तुम्हें भूलने में ज़माने लगेंगे।

यही सोचकर खुद को धारे में छोड़ा,
कभी तो कहीं हम ठिकाने लगेंगे।

ये सच की जमीं से हटो दूर 'चन्दन,
यहाँ झूठ के कारखाने लगेंगे।

एक गीत

धूप....

भोर हुई पर्वत पर आया सूरज लेकर गठरी धूप।
पाँखे खोल उतरने को है रोएँदार सुनहरी धूप।
रेशम-सी किरणों की काया
कोमल उजियाला बिखराया।
आलोकित हैं दसों दिशाएँ,
हुई तिरोहित रजनी-छाया।।
शिशु की मन्द हँसी के जैसी भोली मनहर निखरी धूप।
नवजीवन सन्देशा देने प्रतिदिन जग में उतरी धूप।
कभी कली जैसी मुस्काती।
छुई-मुई सी कभी लजाती।
ओढ़ कभी बादल का घूँघट,
नई दुल्हन जैसी शरमाती।
नभ के पनघट से प्रकाश की भरकर लाई गगरी धूप।
पत्तों के संग नाचे, पंछी के संग गाये कजरी धूप।
ओस कणों से तर फूलों पर।
दम्भी अलसाये शूलों पर।
कभी फुदकती डाली-डाली
कभी लताओं के झूलों पर।
ऊपर नीचे अनथक कितनी बार चढ़ी और उतरी धूप।
सबको कच्ची नींद जगाती नटखट नटी गिलहरी धूप।
माना सब बेदाम करेगी।
लेकिन धीरे काम करेगी।
काज सवेरे का निपटा कर,
दिन मे बस आराम करेगी।
सूरज ने समझाया लेकिन अब तक तो ना सुधरी धूप।
भरी दुपहरी अलसाई सी पत्तों पर है पसरी धूप।
साँझ सलोनी भाये उसको।
घर की याद बुलाये उसको।
चलने को तैयार हो गयी,
अब ना कोई सताये उसको।
घर जाने से पहले थोड़ा चोटी पर है ठहरी धूप।
कल आने का वादा देकर हाथ हिलाती बिखरी धूप।

दो मुक्तक

धूप जब बिकने लगी तो छाँव भी बिकने लगे।
शहर होने की हवस में गाँव भी बिकने लगे।
हौसले चुकने लगे तो मोल मन्जिल का हुआ,
हो गए नीलाम रस्ते पाँव भी बिकने लगे।

उम्र उनकी हो चली थी, पेड़ से पत्ते गिरे।
दिल में माजी की सुहानी याद ले रुखसत हुए।
आँख में आँसू लिए कुछ काँपते होठों से फिर,
कोंपलों को दी दुआएँ, 'खुश रहो, हम तो चले!'

चन्दन बिष्ट
सीमा शुल्क सहायक आयुक्त
(सेवा निवृत्त)

योग

योग-अभ्यास का एक प्राचीन रुप जो भारतीय समाज में हजारों साल पहले विकसित हुआ। इसमें किसी व्यक्ति को सेहतमंद रहने के लिए और विभिन्न प्रकार के रोगों और अक्षमताओं से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यायाम शामिल हैं। योग को मुख्य रुप से चार भागों में बाँटा गया है। जो कि हैं ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग और राज योग। ज्यादातर मनुष्य कर्म योग को अपनाते हैं।

शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है और आपको आराम से रहने में मदद करता है। योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाना जाता है। योग सभी मनुष्यों के जीवन में काफी महत्वपूर्ण है। योग करने से हमें शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक रुप से भी बीमारियों से छुटकारा मिलता है।

यह हमारे शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाता है अर्थात प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। योग करने से हम आसानी से किसी भी बीमारी के सम्पर्क में नहीं आते हैं।

यह हमारे मस्तिष्क को भी शांत रखता है एवं राहत भी देता है। यह हमें हर समय तरोताजा रखता है। यह हमारे जीवन जीने के तरीके में भी बदलाव लाता है।

योग करने से हमारी दिनचर्या भी काफी अच्छी रहती है। यह हमारे शारीरिक एवं मानसिक विकास को भी तेज करता है। योग एक बहुत ही उपयोगी अभ्यास है जिसे करना बहुत आसान है और यह कुछ गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं, जो आज के जीवन शैली में सामान्य हैं, से भी छुटकारा पाने में मदद करता है।

आज पूरी दुनिया योग को अपना रही है। योग को आगे बढ़ाने के लिए ही आज अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस भी मनाया जाने लगा है। आज योग पूरी दुनिया में फैल गया है। सभी इसके महत्व को समझ रहे हैं।

धन्यवाद।

विशाल लक्ष्मण पारचा
कर सहायक

मुश्किलें वह चींजे होती हैं जो हमें तब दिखती हैं जब हमारा ध्यान लक्ष्य पर नहीं होता है।
.... हेनरी फोर्ड

निबंध

हिंदी में कार्यालय की प्रगति में कर्मचारी की भूमिका और भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने के लिए क्या करना चाहिए?

कार्यालय की प्रगति में कर्मचारी की महत्वपूर्ण निस्वार्थ भूमिका होनी चाहिए। क्योंकि कार्यालय ही अपनी कर्मभूमि होती है। जन्मभूमि (घर) से ज्यादा वक्त हम अपने कार्यालय (कर्मभूमि) में ही रहते हैं। इसलिए अपना कार्यालय घर से भी सुंदर, स्वच्छ और पवित्र होना चाहिए। हमें एक साथ मिलकर निस्वार्थ भाव से अपना काम करना चाहिए। पूरी ईमानदारी से एक दूसरे के काम में हाथ बँटाना चाहिए। अपने कर्म पर ही अच्छे, बुरे दिन व्याधित होते हैं। निस्वार्थ सेवा करनी चाहिए क्योंकि स्वार्थ ही मन को भटका देता है।

परमार्थ की भाषा में मन एक चमत्कारी शब्द है। उसके आगे 'न' लगने से नमन हो जाता है और पीछे 'न' लगने से मनन हो जाता है, तो नमन और मनन करते चलिए जीवन सार्थक व आसान हो जायेगा। इसलिए समर्थ रामदास स्वामी जी ने 205 मनाचे श्लोक लिखे हैं।

कार्यालयों में ना कुछ गलत करें न करने दें। रिश्वत की कमाई से दूर रहें। गलत आदतों से दूर रहने के लिए हमें परमार्थ का ज्ञान जरुर लेना चाहिए। गलत सोच से इंसान अंधा होता है। कुछ इस तरह हर कोई चाहता है मेरी सात पुश्तें बैठकर खायें इतना धन मुझे मिले इसलिए वह गलत रास्ते में भटक जाता है। इसी गलत सोच के कारण वह भगवान से माँग कर बैठता है।

भगवान भी उसकी माँग पर तुरन्त तथास्तु बोल देते हैं। क्योंकि भगवान अपाहिज बच्चों को संभालने वाला देख रहा होता है। भगवान ऐसे अपाहिज बच्चे के नसीब का पूरा धन उसे दे देते हैं। क्योंकि भगवान सबके खाने का धरती पर पूरा प्रबन्ध पहले से कर देते हैं।

इस तरह वह अपाहिज बच्चे ना कुछ करते हैं न कर पाते हैं। पूरी जिन्दगी बैठकर ही खाते हैं। इसीलिए अपनी सोच और बुरी आदतें बदल डालो। ईमानदारी की एक जिन्दा मिसाल बनो। क्योंकि बुरी आदतें एक दिन अपना घर फूक देती हैं।

भ्रष्टाचार न केवल हमारे निजी जीवन के लिए अभिशाप है। बल्कि यह राष्ट्र के विकास में भी बाधक है। भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक ही मार्ग है सत्संग, परमार्थ का ज्ञान। इसी से हमें अपने जीवन का अर्थ प्राप्त होगा। इस परमार्थिक मार्ग पर चलकर हम अपना और पूरे देश का विकास कर सकते हैं। हमें देश ने क्या दिया न सोचें। हमने देश को क्या दिया यह सोच रखें। सबका साथ, सबका विकास।

अपने कार्यालय के हर अच्छे काम में सबका सहयोग
करने की कर्मचारी की भूमिका होनी चाहिए

रविंद्र छाया पाटील
कर सहायक/एसआईआईबी/निर्यात

महिला दिवस कार्यक्रम की झलकियाँ

मेडिटेशन कार्यशाला की झलकियाँ

सदस्य सीबीआईसी (श्रीमती रमा मैथ्यू) के भ्रमण की झलकियाँ

सदस्य सीबीआईसी (श्रीमती संगीता शर्मा) के भ्रमण की झलकियाँ

अंतर्राष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस की झलकियाँ

अंतर्राष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस की झलकियाँ

अंतर्राष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस की झलकियाँ

रोजगार मेले की झलकियाँ

कस्टम्स ब्रोकर्स लाइसेंस मैनेजमेंट सिस्टम के उद्घाटन की झलकियाँ

जब आप किसी काम की शुरुआत करें, तो असफलता से मत डरें और उस काम को ना छोड़ें।
जो लोग ईमानदारी से काम करते हैं वह सबसे प्रसन्न होते हैं।

.... चाणक्य

कोविड-19 महामारी में शहीद हुए वॉरियर्स के परिजनों को शहीद दिवस पर सम्मानित किया गया

इससे पहले कि सपने सच हों, आपको सपने देखने होंगे।

.... डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

मियावाकी प्रोजेक्ट की झलकियाँ-वृक्ष लगाएं प्रदूषण को मिटाएं

''मैं सोया और स्वप्न देखा कि जीवन आनंद है। मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है।
मैंने सेवा की और पाया कि सेवा आनंद है।''

.... रबीन्द्र नाथ टैगोर

सीमाशुल्क मुंबई अंचल-1 के सेवानिवृत अधिकारियों /कर्मचारियों हेतु आयोजित विदाई समारोह कार्यक्रम की झलकियाँ

रोज़गार मेले की झलकियाँ

पवित्रता जिनके कंधों पर हैं : स्वच्छता - दूत

मुंबई सीमाशुल्क, अंचल - I

नवीन सीमाशुल्क भवन, बैलार्ड पियर, मुंबई - ४०० ००१.

Mumbai Customs, Zone - I

New Customs House, Ballard Pier, Mumbai - 400 001.